APRIL 15

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

दीनी हिकमत की मांग

"हम मुसलमानों को इस हिकमत को समझ लेना चाहिये कि अगर सौ प्रतिशत मुसलमान तहज्जुद गुज़ार हो जाएं और हर मुसलमान के हाथ में तस्बीह आ जाए और हर मुसलमान इश्राक़ व चाश्त का पाबन्द हो जाए लेकिन अगर अक्सरियत इससे मानूस है। अक्सरियत अपने दिल में उसकी तरफ़ से ज़हर लिये बैठी है। और सीने में अंगारे सुलग रहे हैं तो ख़ुदा न ख़्वास्ता जिस वक़्त इस देश में कोई भूंचाल आयेगा, तो हम अपनी तमाम इबादतों, नफ़िलों के साथ बेदख़ल हो जाएंगे, उस वक़्त नफ़िल जो नफ़िल, जो बुनियादी चीज़ें हैं वो भी नहीं रहेंगी। इसलिये दीनी हिकमत की मांग यही है कि हम इस आबादी को अपने से मानूस बनाएं? इस्लाम का पैग़ाम घर–घर पहुंचाएं और उनको बतलाएं कि इस्लाम क्या है?"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

क़ब्र परस्ती की वईद

हदीस: हज़रत अबूहुरैरा रज़ि० रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूलुल्लाह स०अ० ने इरशाद फ़रमाया: अल्लाह की लानत हो यहूद व नसारा पर, उन्होंने अपने अम्बिया की क़ब्रों को सजदा गाह (और एक दूसरी रिवायत में जश्नगाह) बना लिया। (सही मुस्लिम: १२१४)

फ़ायदा: कुरआन करीम व हदीस शरीफ़ में जिन गुनाहों की सबसे ज़्यादा निंदा की गयी है, उस सूची में पहला नाम शिर्क का है। शिर्क का सबसे बड़ा नुक़सान ये है कि इन्सान उसकी वजह से अल्लाह तआला की पहचान से दूर हो जाता है। अल्लाह तआला का इरशाद है: "और जिसने अल्लाह तआला के साथ शिर्क किया, यक़ीनन वह दूर जा भटका।" यही वहज है कि अल्लाह की पहचान से बेगाना होने के बाद इन्सान अपना वो मेयार खो बैठता है, जो अल्लाह तआला ने उसको तमाम फ़रिश्तों का मसजूद बनाकर अता फ़रमाया था, शिर्क के बाद इन्सान का जो मेयार रह जाता है, कुरआन करीम ने उसको बहुत अच्छे अन्दाज़ के साथ बयान फ़रमाया: "और जिसने अल्लाह के साथ शरीक किया तो मानो वो आसमान से गिरा तो परिन्दों ने उसे नोच डाला या हवा ने उसे दूर ले जाकर फेंक दिया।" (सूरह हज: ३१)

उपरोक्त हदीस में आप स०अ० ने जिन लोगों पर लानत फ़रमायी है उसका आधारभूत कारण यही है कि वो अपने कर्तव्य से ग़ाफ़िल होकर अपने माथों को उस जगह पर टेक रहे थे, जहां से उनको रोका गया था। अलबत्ता इसके अन्दर उम्मते मुस्लिमा के लिए तालीम भी छिपी हुई है कि वो अल्लाह की तौहीद का इक़रार करने के बाद उन्हीं लोगों की रविश न अपना लें जिन पर अल्लाह ने लानत की है। इसीलिये एक दूसरी हदीस में साफ़ तौर पर ये बात फ़रमायी गयी है कि: "तुम्हारा क्या ख़्याल है कि जब तुम मेरी क़ब्र के पास से गुज़रोगे तो उसको सजदा करोगे?ऐसा न करना।" इसी तरह कुरआन करीम में भी बहुत साफ़ शब्दों में ये हुक्म दिया गया है कि अल्लाह के अलावा किसी को भी सजदा जायज़ नहीं है: "न सूरज को सजदा करो और न चांद को, और सजदा अल्लाह को करो जिस ने उनको पैदा किया।"

लेकिन बड़े अफ़सोस की बात है कि कुरआन व हदीस की उन वाज़ेह तालीमात के बाद भी आज उम्मत का बड़ा तबक़ा इसी बुराई के अन्दर लगा हुआ है। इसीलिये कुछ लोग इस ग़लत सोच का शिकार हैं कि केवल अहले बैत व आप स०अ० से ज़ाहिरी मुहब्बत करना ही असल इबादत है, चाहे उनकी सुन्नतों की पैरवी न की जाए। बहुत से लोगों का हाल ये है कि वे केवल औलिया किराम की मज़ारों पर जाकर केवल उनसे मन्नत मांगना ही काफ़ी समझते हैं। या उसकी वफ़ात का साल पूरा होने पर इबादत समझकर उनके नाम से ख़ास दिन मनाना ही अल्लाह से निकटता का साधन समझते हैं।

ख़ुलासा ये कि अल्लाह की मारिफ़त को पाने के लिये, क़यामत के दिन आप स०अ० की शफ़ाअत का मुस्तहक़ बनने के लिये, दुनिया में बुलन्द मेयार पर क़ायम होने के लिये सबसे पहले उन ख़्यालों व ग़लत विचारों को फ़ौरन ख़त्म करना होगा, जिनमें शिर्क की बू आती हो और वो कुरआन की तालीमात के बिल्कुल विपरीत हैं और ये अक़ीदा रखना होगा कि सजदे के लायक़ ज़ात उसी रब ही की है जो तमाम जहानों का बनाने वाला है, वही कारसाज़े हक़ीक़ी, मौलाए कुल, जज़ा और सज़ा भी उसी के अख़्तियार में हैं अगर किसी इन्सान का ये विचार बन जाये और वो इसी के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने वाला बन जाये तो उसके लिये दुनिया व आख़िरत की कामयाबी ही कामयाबी है। जिसकी तरफ़ हदीस शरीफ़ में भी इशारा है: "तुम इस बात के क़ायल हो जाओ कि ख़ुदा के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, कामयाब हो जाओगे।"

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:४ — अप्रैल २०१५ ई० — वर्ष:७

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष – दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मो० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सह सम्पादक
मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुदक
मो० हसन नदवी

अनुवादक
मोहम्मद सैफ़

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

मानवता का संदेश..........२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

बुरी सोच और ईर्ष्या का इलाज..........३
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

इस्लामोफ़ोबिया..........४
शमसुल हक़ नदवी

इस्लामी अक़ीदा..........६
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

आर्थिक संकट और उसका हल..........८
मौलाना ऐजाज़ अहमद आज़मी

मुहम्मद स०अ० की दावत के प्रभाव..........१०
मौलाना असदुद्दीन क़ासमी

सफ़ों का ठीक करने का हुक्म..........१२
क़ारी अब्दुल बासित मुहम्मद

इस्राईल के ज़ुल्म की दास्तान..........१४
ख़लील अहमद हसनी नदवी

इस्लाम की सही तस्वीर पेश करने की..........१५
अब्दुल्लाह ख़ालिद क़ासमी ख़ैराबादी

माँ का मक़ाम..........१७
मौलाना मआज़ अहमद

अबु ग़ुरैब..........१८
मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

अराकान के पीड़ित मुसलमान..........१९
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

अप्रैल फ़ूल..........२०

सम्पादक: बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण, मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

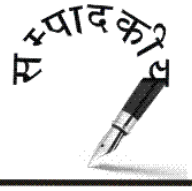

सम्पादकीय

मानवता का संदेश

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हमारा देश इस समय जिन हालात से दो चार है उससे देश की सुरक्षा को ख़तरा होता जा रहा है। कोई भी देश हो जब तक वहां के नागरिकों में भाईचारा न हो, एक दूसरे को समझने की भावना न हो और देश के लाभ के लिये किसी भी स्तर पर कुर्बानी का विचार न हो, उस समय तक वह देश आगे नहीं बढ़ सकता और दुनिया के मानचित्र पर उसे कोई जगह नहीं मिल सकती है।

हमारे देश की ये बड़ी विशेषता और श्रेष्ठता रही है कि यहां के रहने वालों ने देश के लिये कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया है। देश को आज़ाद कराने के लिए यहां के लोगों ने एक साथ लड़ाई लड़ी और उसी एकता का परिणाम था कि देश आज़ाद हुआ, किन्तु अफ़सोस की बात ये है कि आज़ादी के बाद यहां की दो आबादियों के बीच ऐसी खाई पैदा कर दी गयी कि जो आज तक पाटे न पटी। खाई पैदा करने वाले देश के दुश्मन थे। सात समन्दर पार रहने वालो ने देश को गुलाम बनाया और जब देश आज़ाद हुआ तो भी अफ़सोस की बात है कि यहां के रहने वाले उस साज़िश को महसूस न कर सके, जो अंग्रेज़ों ने इस देश को तबाह करने के लिए की थी। इतना समय बीत गया किन्तु अब तक यहां वही इतिहास दोहराया जा रहा है जो अंग्रेज़ो का तैयार किया हुआ था और यहां के वे लोग जो देश के दुश्मन और अंग्रेज़ों के वफ़ादार थे उन्होंने न केवल उस इतिहास को बाक़ी रखा बल्कि उसको और आगे बढ़ाने की कोशिश की। आज भी जो कोशिशें हिन्दुओं और मुसलमानों को लड़ाए जाने की हो रही हैं, वास्तव में ये देश के साथ दुश्मनी है। किसी भी देश के रहने वाले अगर आपस के झगड़े में न पड़े रहेंगे तो उन्नति के सारे कार्य पर्दे के पीछे चले जाएगे और देश आगे बढ़ने के बजाए पीछे की ओर की यात्रा करना आरम्भ कर देगा, फिर न रहने वालों को इत्मिनान रहेगा, और न ज़िन्दगी का कोई मज़ा बाक़ी रहेगा।

इस समय की सबसे बड़ी आवश्यकता ये है कि साम्प्रदायिकता कम की जाए। ज़हनों को साफ़ किया जाए। भ्रान्तियां दूर की जाएं। इसके लिये शिक्षा एवं प्रशिक्षण व्यवस्था में भी पारदर्शिता लाने की आवश्यकता है। देश का भविष्य नयी नस्ल से जुड़ा है। यदि स्कूलों और कालिजों में ज़हन बनाए जाएं और वहां व्यवहारिक स्तर को श्रेष्ठ किया जाए, जिसका फ़िलहाल कोई स्तर बाक़ी नहीं रह गया है, तो हालात बदल सकते हैं और ख़ासकर इन्सानी बुनियादों को मज़बूत किया जाए और मानवीय मूल्यों को उजागर करने का प्रयास किया जाए और इस देश की आत्मा में जो प्रेम व मुहब्बत की भावना रही है उसको बढ़ाने का प्रयास किया जाए। इस समय देश को आगे बढ़ाने के लिये यहां के वातावरण को संतुलित करना बहुत आवश्यक है और उसके लिये केवल यही एक शक्ल है कि मानवता के संदेश को बढ़ावा दिया जाए और देश के कोने–कोने में जाकर इसके लिये हर संभव प्रयास किया जाए, जब वातावरण शांत होगा तब सब कुछ सलामत रहेगा और ख़ुदा न करे यदि हालात बिगड़ गये तो न बहुमत की ख़ैर है न अल्पमत की। आग लगती है तो वह ये नहीं देखती कि ये किसका घर है? उस आग को बुझाने की ज़िम्मेदारी सबकी है।

इस क्रम में ये सोचना कि ये बात तो बहुत आगे बढ़ गयी है एक आदमी या कुछ आदमियों के द्वारा इस बारे में क्या कर सकते हैं तो ये कम हिम्मती भी है और नासमझी भी। बूंद–बूंद से दरिया बनता है और अगर हर व्यक्ति तय करे और इस आवश्यकता के दृष्टिगत खड़ा हो जाए तो संख्या ऐसे लोगों की अधिक है जो कुछ करना चाहते हैं, बस आवाज़ देने की आवश्यकता है, ये आवाज़ वीराने में दी गयी आवाज़ साबित नहीं होगी।

बुरी सोच और ईर्ष्या का इलाज

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

कुरआन मजीद व हदीस मुबारक में ग़ीबत और दूसरों की टोह में रहने से मना किया गया है। क्योंकि ये चीज़ें एकता के लिये एक दीमक की तरह हैं। कभी–कभी इन्सान दूसरों की टोह में अकारण ही इधर–उधर के ख़्यालों में चला जाता है और बिना किसी टोह के दिमाग़ में ये विचार लाता रहता है कि फ़लां व्यक्ति इधर जा रहा था अतः ऐसा होगा, और फ़लां शख़्स यूं देख रहा था इसलिये ऐसा होगा और फ़लां जगह ये नज़र आया था इसलिये ऐसा होगा। ग़रज़ की इस तरह की तमाम बातों से परहेज़ करने के लिये इस्लाम में बताया गया है। क्योंकि ये सब बदगुमानी के नतीजे में होता है और बदगुमानी सबसे बड़ा झूठ है। इसलिये कि आदमी किसी बात को दिल ही दिल में ख़ुद बिठाकर उसी के चक्कर में पड़ा रहता है यहां तक कि वह बात बढ़ जाती है और जब कोई किसी की टोह में लगेगा तो इसमें कोई शक नहीं है कि इन्सान ग़लती से बचा हुआ नहीं है, इसलिए जो जिस शख़्स के पीछे पड़ेगा उसके अन्दर कमियां निकलती ही चली जाएंगी, जैसेः पानी का गिलास अगर सामने रखा हो और आप पानी पीने के बजाए उसको लेंस से देखना शुरू कर दें तो पूरे गिलास में सिवाए कीड़ों के कुछ भी नज़र नही आ सकता। लेकिन अगर उस पानी को न देखें और पी जाएं तो प्यास बुझ जाएगी वरना कीड़ो की टोहबीन के कारण प्यास भी बनी रहेगी। इसीलिये कुरआन मजीद में फ़रमाया गयाः "यानि गुमान का एक हिस्सा गुनाह है" (सूरह हुजुरातः 21) और दूसरे हिस्सों को गुनाह कहने की वजह ये है कि मुमकिन है कि इन्सान जो गुमान कर रहा है उसमें कुछ सही भी हो, इसलिए गुमान के बारे में बताया गया है कि इसका ज़्यादातर हिस्सा गुनाह ही होता है। यानि बिलावजह का गुमान किया जाता है। मालूम हुआ कि केवल गुमान और ख़्याल की बुनियाद पर किसी की टोह में लगना मुनासिब नहीं है जब तक कि खुली हक़ीक़त लोगों के सामने न आ जाए। क्योंकि सिर्फ़ टोह में लगने से सिवाए गुनाह के हासिल होने के कुछ हासिल नहीं होता।

बदगुमानी का इलाजः अब अगर कोई ये सोचे कि वो जड़ से बदगुमानी ही न करे तो ये बात इन्सान के स्वभाव के ख़िलाफ़ होगी क्योंकि इन्सान का नेचर है कि उसके अन्दर बदगुमानी पैदा होना ही है। इसलिए इसका इलाज भी बता दिया गया है कि जब बदगुमानी पैदा हो तो क्या करना चाहिए? आप स0अ0 ने फ़रमा दिया कि ऐसे मौक़े पर एक दूसरे की टोह में न रहो, कोई कुछ बात कह रहा है उससे बदगुमानी न करो, अस्ल में आप स0अ0 के हकीमाना इरशाद ऐसे असरदार ज़रिये हैं कि अगर इन्सान इन बातों पर अमल कर ले तो वो ऐसी तमाम बुराइयों से पाक हो सकता है जिनके वजूद से समाज में बिगाड़ पैदा हो। लेकिन आज कल का दौर यही है कि हर इनसान दूसरे व्यक्ति की कमियों की तलाश में रहता है ताकि फ़लां शख़्स की कमज़ोरियां उनके पास मौजूद रहें और वो इस पर मुसल्लत रहें, लेकिन इस्लाम ने इन सब बातों को मना किया है क्योंकि उनसे समाज की सही उन्नती और तश्कील संभव नहीं। बल्कि समाज में बिगाड़ फैल जाता है जिसका नमूना आज का ज़माना बना हुआ है। मानो बुरे कामों में हिस्सा लेना या किसी की टोह में रहना इस्लाम में बुरा काम है ही नहीं लेकिन अगर कोई भलाई के कामों में एक दूसरे से आगे बढ़ता है तो ये चीज़ अल्लाह को बहुत पसंद है। इसलिए कि कुरआन मजीद में फ़रमाया गया है कि अच्छाई के कामों में तनाफ़ुस किया जा सकता है। जैसे तिलावत कौन ज़्यादा कर सकता है?नफ़िल कौन ज़्यादा पाबन्दी से पढ़ सकता है? अगर ये सब काम अल्लाह के लिये हों तो बहुत बेहतर है, लेकिन अगर उनके अन्दर भी केवल दिखावा हो तो उसका कुछ फ़ायदा नहीं होगा लेकिन अगर इसके बिल मुक़ाबिल कोई शख़्स किसी से इस बात का मुक़ाबला कर रहा है कि कौन ज़्यादा रिश्वत ले सकता है, कौन ज़्यादा ब्याज का कारोबार कर सकता है, कौन ज़्यादा झूठ बोल सकता है तो ऐसे कामों में आगे बढ़ना बिल्कुल जाएज़ नहीं है।

हसद का इलाजः बदगुमानी के बाद समाज की दूसरी सबसे बड़ी बीमारी "जलन" है जो कि समाज की एकता को तोड़ने में दीमक का काम करती है।

.....(शेष पेज 7 पर)

इस्लामोफ़ोबिया

मौलाना शमसुल हक़ नदवी

इस्लाम इन्सानी अक़्ल व समझ की पराकाष्ठा का आख़िरी धर्म है और मानवता के स्थायी मार्गदर्शन के लिये आया है। इसीलिये वो सभी धर्मों से व्यापक व सम्पूर्ण भी है। ये सम्पूर्ण मानवता के लिये है। इसके कार्यक्षेत्र से मानव जीवन का कोई कोना और कोई पहलू बाहर नहीं है। वो उसकी सम्पूर्ण दीनी व दुनियावी और आत्मिक व भौतिक आवश्यकताओं का पूरक और जीवन यापन का सम्पूर्ण नियामक है। इसमें दीनी व दुनियावी और शरीर व आत्मा का भेद नहीं बल्कि दुनिया में अल्लाह के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करने का ही नाम इस्लाम है। इसमें इतनी वृहद्ता है कि वो हर दौर में नेकी के मानवीय उन्नति का साथ दे सकता है तथा इसमें इसका मार्गदर्शन कर सकता है। अतः दिल की गहराइयों से इस पर ईमान रखने वालों को जब भी राज–काज की बाग़डोर सौंपी जायेगी ये हमारा दुखी संसार जन्नत का नमूना बन जायेगा। कुरआन करीम का इरशाद है:

"ये वो लोग हैं कि अगर हम इनको देश की सत्ता दे तो नमाज़ पढ़े और ज़कात अदा करें और नेक काम करने का हुक्म दें और बुरे कामों से मना करें।"

ये है इस्लाम प्रियों की इस्लाम प्रियता का सारांश और सम्पूर्ण मानवता के लिये इस्लाम के दीन–ए–रहमत होने का सारांश कि अगर इस्लाम के सच्चे पैरोकारों को शासन व अधिपत्य प्राप्त हो जाये तो दुनिया में शासन व राजनीति के ख़ाक़े अल्लाह के इस छोटे से कथन के प्रकाश में बनेंगे। समाज से लेकर सत्ता व अर्थव्यवस्था, व्यापार, पर्यटन, न्यायपालिका के क़ानूनों और फ़ौजदारी के नियमों, विभिन्न जातियों व बिरादरियों के साथ न्याय और सबके अधिकारों की सुरक्षा यहां तक कि साहित्य, कला व फ़नकारी सबके सब इस के बनाये हुए ख़ाक़े के अनुसार चलेंगे।

इस सृष्टि की रचना करने और इसको चलाने वाले सृष्टा की उपासना और उसके सामने सर झुकाने और उसके आदेशों का पालन करने के साथ–साथ इस्लामिक विचारों वाली सत्ता कुछ इस तरह प्रशिक्षित होगी कि बैतुलमाल की स्थापना के बाद कोई नंगा, भूखा न रहने पायेगा। अदालतों के न्याय बिकने के बजाये मिलने लगेगा। रिश्वत, चालबाज़ी, झूठी गवाहियों और क़स्मों का ख़ात्मा हो जायेगा। अमीर को ग़रीब को ज़लील समझने और उसका हक़ मारने और सताने का कोई हक़ और कोई मौक़ा का बाक़ी न रह जायेगा। चोरियां और बदकारियां, डाके और क़त्ल व लूटपाट का ख़ात्मा हो जायेगा। एक कमज़ोर आदमी रात के अंधेरे या सेहरा या वीराने में सोने या रूपये पैसे को गट्ठर लेकर चलेगा और किसी को आंख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं होगी। ग़रीबों का ख़ून चूस कर तैयार होने वाली महाजनी कोठियों और सूदख़ोर साहूकारों और बैंकों के टाट उलट जायेंगे। शराबी और जुआड़ी अगर अपनी हरकत न छोड़े तो तड़ीपार कर दिये जायेंगे। सिनेमा और थियेटर जो बेहयाई और अश्लीलता का खेल दिखा–दिखाकर समाज की आंखों से लाज–लज्जा को ख़त्म करके बदकारी का तूफ़ान उठाते हैं, उनकी सभी तमाशागाहों को तुरन्त बन्द कर दिया जायेगा।

अश्लील साहित्यों, चारित्रिक गिरावट के अफ़सानों और बेहया शायरी की जगह पाकीज़ा और तामीरी साहित्य लेंगे। शहर व देहात, कूचा व बाज़ार हर जगह इन्सानी शराफ़त और प्यार व मुहब्बत की शहनाइयां बजती सुनाई देंगी।

मानवीय जीवन यापन के नियम किसी विशेष क़ौम व किसी विशेष युग के रस्म व रिवाज पर स्थापित नहीं हैं। बल्कि उसमें इस विचार व सोच की पूरी छूट रखी गयी है जिस पर इन्सान पैदा किया गया है। जब मानव प्रकृति हर युग में स्थापित है तो प्राकृतिक दीन के आदेशों व नियमों को भी स्थापित करना आवश्यक है अन्यथा मानव समाज में ऐसे–ऐसे बदलाव होंगे जो उसको जानवरों से भी बदतर बना देंगे और फिर उसको इन्सान बनने से वहशत होगी।

कुछ अर्से पहले की बात है कि लखनऊ के बलरामपुर अस्पताल में ऐसे लड़के को ईलाज द्वारा मानव प्रकृति पर लाने का प्रयास किया जा रहा था जिसको बचपन में भेड़िया उठा ले गया था मगर खुदा की कुदरत की भेड़िये ने उस बच्चे को खाया नहीं बल्कि उसकी मादा जो बच्चे दिये हुए थी अपने बच्चों के साथ उसको भी पालती रही। उस माहौल में उस बच्चे के चलने का अन्दाज़, खाना व बोलना सब बदल गया। उसको इन्सानों से वहशत होती थी। उसको देखने के लिये एक भीड़ लगी रहती थी। लोग उस पर ख़र्च करने के लिये रुपये भी देते थे लेकिन चूंकि माहौल उसकी प्रकृति पर हावी हो गया था, वो भयभीत

रहता था। अन्ततः उसकी मृत्यु हो गयी। ये 1958 या 1959 ई0 का वाक़्या था। स्वयं लेखक ने भी उस लड़के को देखा था।

ये तो सब जानते हैं कि एक शरीफ़ घराने का बच्चा जब चोरों और उचक्कों के माहौल में रहने लगता है तो उसको अपने घर के गंभीर व प्रतिष्ठित वातावरण से घबराहट होने लगती है।

हमारी आज की दुनिया की स्थिति कुछ इसी प्रकार की है। पश्चिमी विचारों व संस्कृति ने इसकी भौतिकता व शहवत रानी की अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को ऐसे सांचे में ढाल दिया है कि इन्सान अपनी प्रकृति कसे बहुत दूर निकल चुका है। फ़ितरत से दूर निल जाने के बाद उसने हवसरानी और मनमानी ज़िन्इगी की ऐसी दुनिया बनायी है कि फ़ितरत की तरफ़ लौटने में उसको डर लग रहा है। इसलिये तमाम क़ौमें और लोग जो इस नयी और आवारा सभ्यता के छलावे में फंस चुका है। इनको इस्लाम और इस्लाम प्रियो से वहशत होती है। वो इस डर से कि कहीं इस साफ़–सुथरे और मानवीय प्रकृति के प्रवक्ता व पवित्र जीवन व्यवस्था का चलन न हो जाये, भयभीत रहते हैं और इससे बचने के लिये उसको इन नामों से याद करते हैं जिन से लोगों को इस इस्लाम से इस तरह भयभीत करें जैसे सांप, बिच्छू और ज़हरीले जानवरों और जरासीम से डराया और भयभीत किया जाता है। अतः पत्रकारिता और मीडिया की पूरी ताक़त इसके ख़िलाफ़ लगी हुई है। कोई बात कितनी ही ग़लत हो लेकिन जब बार–बार इसे दोहराया जाये, तरह–तरह के विषयों से उसकी अच्छाइयां बतायीं जायें तो वो बुरी और सौ प्रतिशत ग़लत बातें भी सच और सही लगने लगती हैं। इस समय इस्लाम और मुसलमानों के बारे में पश्चिमी क़ौमों और उसके अज़ली दुश्मनों यहूद व नसारा ने यही अन्दाज़ अपना रखा है और इसके असर से पूरब की लज्जावान क़ौमें भी इसका साथ देने लगीं। इसलिये कि इस्लाम आयेगा और इस्लाम प्रियों को दुनिया की व्यवस्था चलाने का अवसर प्राप्त होगा तो हया व शर्म से खाली व धन व भौतिकता के उन भूखों जो कमज़ोरो की इज़्ज़तों से खिलवाड़ करते हैं और उनका ख़ून चूस–चूस कर रंग रलियां मनाते है। उन सबका ख़ात्मा हो जायेगा। ये है इस्लाम और इस्लाम के मानने वालों से डर का कारण जिसकी वजह से इसके विरोध में शोर व हल्ला मचा हुआ है और उसमें वो नाम के मुसलमान भी शामिल हो जाते हैं जिन्होंने पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से अपनी सच्ची प्रकृति पर गर्दा डाल दिया है और जब वो पश्चिमी सभ्यता की ऐनक से इस्लाम को देखते हैं तो उनको इसमें तंगी नज़र आती है। वो घुटन व चुभन महसूस करते हैं। इसलिये वो भी वही बोली बोलने लगते हैं जो उनका पश्चिमी गुरू बोलता है।

ये इस्लाम के लिये कोई नयी बात नहीं। पूरे मानव इतिहास और सारे नबियों की सीरतें इसकी गवाह हैं कि हर युग में इस्लाम का विरोध हुआ है। इस पर तानो के तीरों की बौछार हुई है। लेकिन दीन–ए–हक़ का चिराग़ तमाम तूफ़ानों से गुज़र कर ज़िन्दा रहा है और विरोध पर उतारू क़ौमें तबाह व बर्बाद हुई हैं।

जब आख़िरी रसूल आये तो उनको भी विरोध का सामना करना पड़ा और बेगानों से ज़्यादा अपनो ने सताया मारा और हंसी–मज़ाक़ उड़ाया। मगर फिर दुनिया ने क्या देखा घमन्ड के मतवाले किस तरह मिटते या इस्लाम में आते चले गये। जिस बादशाह ने आप स0अ0 क ख़त को फ़ाड़ा उसके शासन के चीथड़े उड़ गये। आज जब आप स0अ0 को दुनिया से गये हुए चौदह सौ साल हो चुके हैं जो हर पढ़े–लिखे इन्सान की फ़ितरत में है। इस्लाम ने इन सारे तूफ़ानों से गुज़र कर आज भी वैसे ही जिन्दा और इन्सानियत को नजात दिलाने वाला है जैसे पहले दिन था। उस समय भी जो तूफ़ान इस्लाम के ख़िलाफ़ बरपा है वो तूफ़ान भी चलता रहेगा लेकिन इस्लाम पर आंच न आने पायेगी, मिटेंगे वही जो इस्लाम को मिटाना चाहेंगे जैसा कि होता रहा है। और मिटती हुई क़ौमों का इतिहास इसका गवाह है। विरोधियों और इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशों के इस तूफ़ान में ईमानवालों का इम्तिहान है कि वो इस पर जमे रहें और विरोधियों से घबराकर हिम्मत न हारें। ख़ैर उम्मत होने की उन पर जो ज़िम्मेदारी है किसी जज़बातियत का शिकार हुए बग़ैर इसको हिम्मत व हौसले के साथ और उन आदाब के साथ जो कुरआन करीम और रसूल स0अ0 ने उनको बताये हैं अदा करते रहें। विरोध के ये बादल उठते छटते रहे हैं। ये भी छट जायेंगे और ख़ुदाई मदद आयेगी जैसे इस्लाम की चौदह सौ साला इतिहास में आता रहेगा मगर ये नहीं कहा जा सकता कि कब आयेगी और कितने इम्तिहानों के बाद आयेगी। बस इतना ही कहा जा सकता है कि "अल्लाह ही के लिये है ज़मीन व आसमान का लश्कर।"

इस्लामी अक़ीदा

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हिसाब–किताब जज़ा–सज़ा

आख़िरत के अक़ीदे का अहम हिस्सा ये है कि इन्सान को दुनिया में अपने किये हुए कामों पर जज़ा या सज़ा का यक़ीन हो। वो ईमान रखता हो कि हमारे हर काम का वहां हिसाब लिया जाएगा। अच्छे कामों का अल्लाह तआला की तरफ़ से अच्छा बदला मिलेगा और बुरे कामों की सज़ा मिलेगी और जो चाहेगा अल्लाह तआला माफ़ करेगा, इरशाद होता हैः "बस जिसने ज़र्रा बराबर भी भलाई की होगी वह उसको देख लेगा और जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की होगी वह उसको देख लेगा।" (सूरज ज़लज़लाः 7–8)

ये हिसाब आख़िरत के दिन होगा जिस दिन के बारे में कुरआन मजीद में कहा गया है कि वह बहुत बड़ा दिन होगा। उस दिन इन्सान को उसके अमल के मुताबिक़ बदला दिया जाएगा, इरशाद होता हैः "आज तुम्हें वहीं बदला दिया जाएगा जो तुम करते रहे थे।" (सूरह जासियाः 28)

उस दिन पाई–पाई का हिसाब होगा, और इन्सान ने जो भी अच्छे बुरे काम किए हैं, सब उसके सामने आ जाएगें, इरशाद होता हैः "जिस दिन हर शख़्स अपने हर भले अमल को हाज़िर पाएगा" (आले इमरानः30) "जब आसमान फट जाएगा और जब सितारे बिखर जाएगें और जब समन्दर उबाल दिये जाएगें, और जब क़ब्रों को उथल पुथल कर दिया जाएगा (उस वक़्त) एक–एक शख़्स को मालूम हो जाएगा कि उसने क्या भेजा और क्या छोड़ा।" (इन्फ़ितारः 1–10)

ऊपर की आयतों में क़यामत का मन्ज़र खींच दिया गया है और कहा गया है कि इन्सान जो कुछ दुनिया में करता है, उस दिन सब उसके सामने होगा, और उसका हिसाब उसे देना पड़ेगा।

अल्लाह फ़रमाता हैः "और जब दो लेने वाले लेते रहते हैं, एक दाएं और एक बाएं बैठा है, जो बात भी उसके मुंह से निकलती है तो उसके पास ही एक मुस्तैद निगरां मौजूद रहता है।" (सूरह काफ़ः 17–18)

जबकि फ़रिश्तों का लिखना आम लिखावट की तरह नहीं, वो इस तरह महफ़ूज़ करते हैं कि क़यामत में पूरा मन्ज़र पेश कर दिया जाएगा, और सब कुछ निगाहों के सामने आ जाएगा, आज के ज़माने में इसका समझना कुछ दुश्वार नहीं, छोटी सी चिप में न जाने क्या–क्या महफ़ूज़ हो जाता है, और ज़रूरत के हिसाब से आदमी उसको देख और सुन सकता है और न जाने क्या–क्या आगे नयी नयी चीज़ें ईजाद हो जाएगीं, जिनसे समझना और ज़्यादा आसान हो जाएगा। अल्लाह के लिये क्या मुश्किल है, उसी ने फ़रिश्तों को हुक्म दे रखा है कि वे सब कुछ सुरक्षित कर रहे हैं और ये सिलसिला हर इन्सान के साथ लगा हुआ है। क़यामत में इसको निकालकर सामने कर दिया जाएगा। इरशाद होता हैः "हर इन्सान के आमाल को हमने उसकी गर्दन में लगा दिया है और क़यामत के दिन हम उसको एक तहरीर की शक्ल में निकाल कर उसके सामने कर देंगे जिसे वह खुला हुआ पाएगा, अपना आमालनामा ख़ुद ही पढ़ आज अपना हिसाब लेने को तू ख़ुद ही काफ़ी है।" (सूरह बनी इस्राईलः 13–14)

हिसाब इस तरह लिया जाएगा कि सबकुछ कच्चा चिट्ठा सामने कर दिया जाएगा, आदमी की ज़बान गूंगी हो जाएगी, और उसके अंग गवाही देंगेः "आज हम उनके मुंह पर मोहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बात करेंगे और उसके पैर उसकी गवाही देंगे कि वो क्या कमाई किया करते थे।" (सूरह यासीनः 65)

अच्छे बुरे आमाल जब बिल्कुल सामने आ जांए तो अल्लाह उसको अपनी तराज़ू में तौलकर जन्नत या दोज़ख़ का फ़ैसला फ़रमा देंगेः "और क़यामत के दिन हम इन्साफ़ की तराज़ू क़ायम करेंगे।" (सूरह अम्बियाः 47)

उस दिन ज़रा भी नाइंसाफ़ी न होगी, और जो होगा वो ठीक–ठीक सामने आ जाएगा। इरशाद होता हैः "और वज़न उस दिन ठीक–ठीक होगा, फिर जिनके तराज़ू वज़नी रहे तो वही लोग अपनी मुराद को पहुंचे, और जिनके तराज़ू हल्के रहे तो वही लोग है जिन्होंने अपना नुक़सान किया, इसलिये कि वो हमारी निशानियों के साथ इन्साफ़ न करते थे।" (सूरह आराफ़ः 8–9)

"बस जिसकी तराज़ू भारी रही तो वो मनपसंद ज़िन्दगी में होगा और जिसकी तराज़ू हल्की रही तो उसका ठिकाना एक गहरा गढ़ा है और आपको पता भी है कि वो गहरा गढ़ा क्या है।" (सूरह अलकारियाः 6–9)

तराजू का नाम आते ही डन्डी, कांटा और न जाने क्या

क्या ज़हन में आता है। लेकिन अब तो इसका समझना भी आसान हो गया है। न जाने नापने और तौलने वाली कैसी–कैसी चीज़े ईजाद हो गयी हैं जिनमे अक्षर को भी तौला जा सकता है और गर्मी व बुरूदत का भी अन्दाज़ा आसानी से कर लिया जाता है। यहां तक कि इन्सानी मिज़ाज को नाप लिया जाता है। अल्लाह तआला हर चीज़ का ख़ालिक़ व मालिक है। उसकी इन्साफ़ की तराज़ू कैसी होगी उसकी हक़ीक़त को कौन समझ सकता है मगर ये बात तय है कि उसके ज़रिये से इन्सान का कुल आमाल उनका संबंध ज़ाहिरी अज़ा से हो या बातिनी कैफ़ियत व एहसास से सभी चीज़ें इस तराज़ू में तुल जांएगी और दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा। अब जन्नत वालों के लिये जन्नत और दोज़ख़ वालों के लिये दोज़ख़ का फ़ैसला कर दिया जाएगा।

पुस सरातः जहन्नुम के ऊपर ये एक निहायत नाज़ुक गुज़रगाह है जिस पर से हर नेक व बुरे को गुज़रना होगा। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता हैः "और तुममें से हर एक को उस पर से होकर गुज़रना है, आपके रब का ये हतमी फ़ैसला है।" (सूरह मरियमः 71)

लोगों का गुज़रना अपने अपने आमाल की बुनियाद पर होगा। अम्बिया व सिद्दीकीन, शुहदा व सालिहीन ऐसे गुज़र जाएंगे कि जैसे बिजली कौंध गयी। बाज तेज़ रफ़्तारी के साथ और बाज़ चलते हुए गुज़रेंगे लेकिन जो बुरे काम करने वाले हैं जिनके लिये जहन्नम का फ़ैसला उनकी बदआमालियों की वजह से जहन्नम का हो चुका है वो घिसट–घिसट कर उस पर चलेंगे और कट कट कर उसमें गिर जाएंगे। हदीस में इसके बारे में आया है कि वो तलवार से ज़्यादा तेज़ और बाल से ज़्यादा बारीक है।

बुख़ारी शरीफ़ की एक लम्बी रिवायत में आता हैः

एक बहुत ही फिसलने वाला चिकना रास्ता, जिस पर पांव टिक न सके, उस पर नोकदार मुड़ी हुई कीलें, और बड़े–बड़े कांटे जिसमें मुड़े हुए छोटे–छोटे कांटे होंगे जो नज्द में पाए जाते हैं, जिसको "सादान" कहते हैं, ईमान वाला उसको पलक झपकते ही गुज़र जाएगा और जैसे बिजली कौंधे, तेज़ हवा की तरह, तेज़ रफ़्तार घोड़ों की तरह, या सवारी की तरह, जो बाज़ पूरी तरह से नजात पा जाएंगे और बाज़ जख़्मी होकर बचते–बचते निकलेंगे और बाज़ कटकर जहन्नम में गिर जाएंगे, यहां तक कि उनमे आख़िरी आदमी घिसट–घिसट कर चलेगा।

एक दूसरी रिवायत में तफ़सील है कि उस दिन अल्लाह तआला ईमान वालों को उनके आमाल के एतबार से एक नूर अता फ़रमाएंगे बाज़ों का नूर पहाड़ की तरह होगा और बाज़ों का उससे यहां तक कि कुछ का केवल पैर के अंगूठे के बराबर होगा।

उस रोशनी में लोग गुज़रेगे। उस नूर का ज़िक्र कुरआन मजीद में भी आया है। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः "उस दिन आप मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखेंगें कि उनका नूर उनके सामने और उनके दाएं दौड़ता चलेगा, आज तुम्हें बशारत हो ऐसी जन्नतों की जिनमें नहरें जारी हैं, उन्हीं में हमेशा के लिये रहना है, यही बड़ी कामयाबी है। उस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमान वालें वालों से कहेंगे ज़रा हमें भी देख लो तुम्हारी कुछ रोशनी हम भी हासिल कर लेंगे, कहा जाएगा, पीछ लौट जाओ और (जाकर) रौशनी तलाश करो। बस उनके बीच एक ऐसी दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा जिसके अन्दर की तरफ़रहमत होगी और उधर उसके बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा।" (सूरह अलहदीदः 12–13)

शेष : बुरी सोच और ईर्ष्या का इलाज

इसका भी छोटा सा लेकिन बड़ा प्रभावित इलाज अल्लाह के रसूल स0अ0 ने बयान फ़रमायाः जब किसी को किसी के बारे में जलन पैदा हो जाए तो वह अपनी जलन को दिल में दबाए रखे, उसको ज़ाहिर न करे, अस्ल में ये बहुत ही कारगर नुस्ख़ा है, क्योंकि जिस तरह मिट्टी में की जाने वाली हर खेती की एक खाद होती है, यानि उसी तरह इन्सान भी चूंकि मिट्टी का बना हुआ है और उसकी ये खेती आख़िरत में काटी जाएगी, इसलिये कि रिवायत में आता है कि दुनिया आख़िरत की खेती है और इसलिये इसको भी खाद की ज़रूरत है और इस मिट्टी की खाद हसद है और चूंकि अगर खाद बाहर रहती है तो बदबू फैलती है लेकिन अगर उसको अन्दर ज़मीन में दफ़न कर दिया जाता है तो उसमें खुशबूदार फल और फूल उगते हैं। इसी तरह अगर कोई शख़्स जलन ज़ाहिर करेगा तो लड़ाई और फ़साद का वजूद होगा, लेकिन अगर कोई अपनी हसद को दबाएगा और जिससे नफ़रत है उससे अच्छी–अच्छी बातें करेगा तो यही दफ़न किया हुआ हसद मुहब्बत के फूल झाड़ेगा।

आर्थिक संकट और उसका हल

मौलाना एजाज़ अहमद आज़मी

कुछ दिनो पहले की बात है, एक व्यापारिक क्षेत्र में कोई ग़ैर मुस्लिम सरकारी अधिकारी आया। वह लोगों के हालात के पता कर रहा था, जिनके बीच वह था। वे सब मुसलमान थे। उन लोगों ने आर्थिक संकट की शिकायत की और बताया की कारोबार ठप पड़ा हुआ है, लोग आर्थिक तंगी झेल रहे हैं। इस पर उस ग़ैर मुस्लिम ने जो कुछ कहा उसका निचोड़ ये था:

"आप लोगों पर तो इस व्यापारिक संकट का कोई असर नहीं, सिनेमा की खिड़कियों पर आपकी भीड़ लगी रहती है। कहीं मुशायरा होता है तो लाखों रूपये आप लोगों की जेब से निकलते हैं। नाच गानो पर तो आप लोग दूर–दूर तक पहुंच जाते हैं। यानि फ़िज़ूल ख़र्ची बल्कि गुनाह के कामों में आप लोग बहुत आगे रहते हैं। फिर आर्थिक संकट का रोना क्यों? हम तो जब समझते कि आप आर्थिक रूप से परेशान हैं, जब आप उन जगहों पर नज़र न आते, रुपये संभल कर ख़र्च करते, लेकिन क्या ऐसा होता है?हम तो नहीं देखते।"

यह उस ग़ैरमुस्लिम का मुसलमानों के मुंह पर उनकी ग़ैरत को ललकारने वाला एक ज़ोरदार तमाचा है, लेकिन क्या हमारी क़ौम को शर्म आयी?क्या उन्हें ग़ैरत आयी?उन्होंने अपने जीवन में कोई बदलाव किया?

इसमें कोई शक नहीं कि लोग व्यापार को लेकर परेशान है। आर्थिक संकट ऐसी अविश्वस्नीय स्थिति का शिकार हैं कि हर व्यक्ति को चाहे वो बड़ा व्यापारी हो या मामूली कारोबारी, भविष्य अंधकारमय ही नज़र आता है। हर व्यक्ति की ज़बान पर शिकायत ही शिकायत होती है। कोई शासन को बुरा–भला कह रहा है कि उसकी ग़लत पॉलिसियों ने कारोबार को तबाही के मुख पर लाकर खड़ा कर दिया है, इसमें कोई शक नहीं कि ये भी सही है कि शासन की नियत व काम दोनों ग़लत हैं। फिर भी क्या हमारी चर्चाओं, कुछ लोगों के विरोध प्रदर्शनों और हड़तालों से ये पॉलिसियां सही हो जाएंगी।

हर मुसलमान जानता है कि बल्कि ग़ैरमुस्लिम भी जानता है कि रोज़ी और अमीरी व ग़रीबी का संबंध अल्लाह तआला से है: "जिसके लिए चाहें रोज़ी कुशादा कर देते हैं, और जिसके लिये चाहें तंग कर देते हैं।"

इस विषय की बहुत सी आयतें कुरआन पाक में हैं और अल्लाह तआला ने अर्थ व्यवस्था की योजना बनाने वालों के सिलसिले में ये भी फ़रमाया है कि: "और अल्लाह ही की मिल्कियत में ज़मीन और आसमान के सभी ख़ज़ाने हैं लेकिन मुनाफ़िक़ीन नहीं समझते।"

बेशक मुनाफ़िक़ीन इस बात को नहीं जानते के ज़मीन व आसमान के सभी ख़ज़ाने अल्लाह तआला के क़ब्ज़े में है, जब हिकमत व मसलहत की मांग होती है, बन्दों के बीच उसे वितरित करते हैं: "और हर चीज़ के ख़ज़ाने हमारे पास ही हैं और हम ही उन्हें एक निश्चित मात्रा नाज़िल करते हैं।" ये सब बात मुनाफ़िक़ो की समझ में नहीं आती है, क्योंकि उनके दिल ईमान से ख़ाली हैं, लेकिन अफ़सोस की बात यह है कि जो लोग ईमान व यक़ीन रखते हैं वे भी अनजान बन जाते हैं। उनके हालात व आसार से ऐसा महसूस होता है जैसे वो इस मोटी सी ईमानी बात को नहीं जानते।

ये खुली हुई वास्तविकता है जिससे कोई इनकार नहीं कर सकता है कि हर चीज़ का जो मालिक होता है और साथ–साथ वो अख़्तियार व कुदरत वाला हो, उससे लड़कर, उसे नाराज़ करके वो चीज़ हासिल नहीं की जा सकती है। इसका एक ही रास्ता तय है कि उसे राज़ी किया जाए, किसी ढंग से उसे खुश किया जाए, तभी वो चीज़ मिल सकती है, रोज़ी और कारोबार को न किसी शासन की पॉलिसी ने ठप किया है, और न किसी क़ौम है, ये सारी चीज़ें उसी मालिक व मौला की मशीयत हैं जिसने ऐलान किया है और बार–बार ऐलान किया है

कि ज़मीन व आसमान और उसके सभी ख़ज़ाने उसी के हाथ में हैं। उसी मालिक ने इरादा फ़रमाया और कारोबार मन्दा पड़ गया, फिर जब वही इरादा करेगा तो कारोबार खुलेगा।

ऐसे हालात में क्या यही करने के काम है कि, अल्लाह का नाम लेने वाले मुशाएरे कराएं, और उन पर अपनी जान व माल ख़र्च करें, शायरों के पीछे दौड़ें, वो शायर जिनके पीछे दौड़ने वालों को अल्लाह तआला गुमराह क़रार दे। (और शायरों के पीछे वही लोग लगते हैं जो गुमराह हैं) क्या यही काम रह गया है कि मुशायरों की राह में मुसलमान अपनी जानें ख़ाली करें, मुसलमानों के पूंजीपति इसमें भारी–भारी चन्दे दे, और क्या मुसलमान नवजवानों के लिये यही व्यस्तता रह गयी है कि कारोबार मन्दा हो गया है। अर्थव्यवस्था ठप पड़ी है, तो लाओ खेल के मैदान को सजाएं, झुन्ड के झुन्ड उछल कूद करें, क्रिकेट, फुटबार या वालीवॉल में अपने मूल्यवान समय को अपने दिल व दिमाग़ को नष्ट करें, कुछ खेलने वाले उनसे ज़्यादा देखने वाले, सिर्फ़ थोड़ी देर तफ़रीह के लिये नहीं, तबियत को ताज़ा करने के लिये नहीं, मुस्तक़िल मशग़ला बनाकर खेलकूद में अपने समाज को तबाह करें। सिनेमाघरों की रौनक उनसे हो, क्या यही काम रह गया है, और अगर ये नहीं तो आपसी लड़ाई–झगड़े, एक दूसरे को तकलीफ़ें पहुंचाना, बुराइयां इत्यादि करें, क्या यही वो काम हैं जिनसे बन्द पड़ा हुआ कारोबार खुल जाएगा, रोज़ी के बन्द दरवाज़े खुल जाएंगें, तबाह होती हुई अर्थव्यवस्था आबाद हो जाएगी, क्या इन्हीं कामों से ज़मीन व आसमान के ख़ज़ानों का मालिक ख़ुश हो जाएगा और वो ख़ज़ानों को हम पर उंडेल देगा, नहीं कभी नहीं, हरगिज़ नहीं!

तो ऐ मुसलमानों! ये क्या हो रहा है?क्या ज़माने में पनपने की यही बातें हैं?क्या सरबुलन्दी का राज़ इसी में है? हरगिज़ नही तो ख़ुदारा बताओ कि हमारा रास्ता किन लोगों का रास्ता है, क्या यही नबी का रास्ता है, क्या इसी पर अल्लाह के आख़िरी पैग़म्बर ने हमको चलाया था? क्या नबी और असहाब के दौर में जब आफ़तों की यलग़ार होती थी, तो वहां भी यही तरीक़े अख़्तियार किये जाते थे।

काम ये नहीं है, काम ये है कि तबाही के इन हालात में आदमी संजीदा हो जाए, अपनी ग़लतियों को माने, कारोबार में आदमी ईमानदारी और दयानतदारी को अख़्तियार करे, हाल ये है कि मआशी मशग़ला अख़्तियार करने वाला हर तबक़ा भ्रष्ट्राचार का शिकार है, कोई भी व्यापार और कोई भी कारोबार ऐसा नहीं है कि उसमें विभिन्न प्रकार के भ्रष्टाचार का दख़ल न हो, चाहे वो पूंजीपतियों का वर्ग हो, चाहे वो मज़दूरों का वर्ग हो, और चाहे वो नौकरी करने वाले लोग हों, जिसको जितना और जहां मौक़ा मिलता है अल्लाह के डर को भूलकर वो अपनी ज़ाहिरी फ़ायदे को अपनाता है। ये भ्रष्टाचार जब सामूहिक रूप ले लेता है तो अल्लाह का फ़ैसला बदलता है। गुनाहों की अधिकता और उस पर तौबा व शर्मिन्दगी का न होना कारोबार को फ़ेल कर देता है। ये भ्रष्टाचार वो है जिसकी तलाफ़ी नफ़िल नमाज़ों से भी नहीं होती, लेकिन आह! हम नफ़िल नमाज़ों का क्या नाम लें यहां तो फ़र्ज़ में ग़फ़लत हो रही है, ये और एक गुनाह है, और बड़ी मुसीबत है कि इस्लाम का नाम लेने वाला अपने ही हाथों इस्लाम की जड़ खोद रहा है। मस्जिदें शानदार बन गयी हैं, मगर नमाज़ी न रहे, ख़ास तौर पर फ़ज्र की नमाज़ से तो वो गफ़लत है कि हर मस्जिद रोती है, यही वक़्त है जब अल्लाह तआला की तरफ़ से रोज़ी के, सेहत के, मग़फ़िरत के, फ़ैसले होते हैं और अल्लाह से ये सारी चीज़ें चाहने वाला ग़फ़लत के ख़्वाब में पड़ा रहता है, भला उसका भला कैसे होगा?

इस आर्थिक बदहाली और कारोबारी परेशानी का हल ये है कि हर शख़्स अपने सभी गुनाहों से तौबा कर ले, ख़ासकर करके वो गुनाह जिसका नुक़सान बन्दों पर पड़ता है, जैसे बददयानती, बेईमानी, झूठ, झूठा वादा, नाजायज़ मिलावट, लेन–देन में धोखा कर्ज़ लेकर बेफ़िक्र हो जाना, एहसान करके जतलाना या एहसान लेकर नमकहरामी करना, उनसे सच्ची तौबा करे, उन्हें छोड़े, जितना हो सके उसकी तलाफ़ी करे, फ़र्ज़ की पाबन्दी करे, रात के आख़िरी पहल उठकर अल्लाह के दरबार में रोएधोए, हिसाब करके पाई–पाई की ज़कात अदा करे, फिर इंशाअल्लाह हालात बदलते देर नहीं लगेगी। हाँ! गुनाहों और फ़िज़ूल ख़र्ची में माल बर्बाद न करें, अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल व करम से आफ़ियत नसीब फ़रमाएगें

मुहम्मद (स0अ0) की दावत के प्रभाव

मौलाना मुहम्मद असद क़ासमी

जाहिलियत के ज़माने का अरब का आदमी केवल अपने क़बीले को जानता था और विरोध के समय अपने ख़ानदान तक सीमित हो जाता था और दूसरों को जीने का हक़ भी नहीं देना चाहता था और एक ख़ानदान के लोग किसी जनहित की चीज़ पर सहयोग नहीं करते थे बल्कि उसके बारे में सोच भी नहीं सकते थे क्योंकि वो मानवता की तरह अरब क़ौमियत से भी अपरिचित थे। उनका जीवन दूसरे क़बीलों से नफ़रत और दुश्मनी का नाम था। हर क़बीला केवल अपना लाभ जानता था और दूसरों से जंग करने और उनको पराजित करने का इच्छुक रहता था। मुहम्मद (स0अ0) की दावत ने अरबों की इन शर्मनाक रिवायतों को ख़त्म कर दिया और क़बीले के लिये लड़ने वालों को उम्मत का विचार दिया। मानवाधिकार बहाल किये और आपसी खूंरेज़ी और लूटमार के विपरीत उन्हें नेकी में सहयोग, सामूहिक न्याय और पाक–साफ़ अक़ीदे पर एकजुट किया और इस प्रकार अरबों के दृष्टिकोण को बदल कर उनके वहशी नज़रिये को मानवीय विचार व नज़रियों में बदल दिया। शरीअत व क़ानून को हर चीज़ पर अधिपत्य दिया और ख़ैर व भलाई का शासन स्थापित किया जिसके परिणाम में ज़ालिमाना बदले की जगह न्यायिक बदले ने ले ली और क़बीले की जवाबदेही के विपरीत सामूहिक व सामाजिक पूछताछ का भाव पैदा हो गया। इन क़ुरआनी आयात में इन्हीं वास्तविकताओं की ओर इशारा किया गया है कि: "कोई किसी और का बोझ नहीं उठायेगा।" "और हर जान अपने किये की ज़िम्मेदार है।" "और इन्सान अपनी मेहनत का हक़दार है।"

शरीअत के अधिपत्य ने जाहिली दावे और नारे ख़त्म कर दिये और हर व्यक्ति इस दावत का दायी बन गया और इन्साफ़ व क़ानून का पाबन्द हो गया। व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी पैदा हो गयी और अमल के मैदान में नस्ल व ख़ानदान और धन व दौलत का दख़ल समाप्त हो गया।

हज़रत लुक़मान अलै0 ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए फ़रमाया बेटा! "अगर कोई काम राई के दाने के बराबर हो फिर वो किसी पत्थर के अन्दर हो या वो आसमान के अन्दर हो या वो जमीन के अन्दर हो तब भी उसको अल्लाह तआला हाज़िर कर देगा" दुनिया के इन्सान मुहम्मद (स0अ0) की दावत के कारण एक–दूसरे के समान हो गये। शरीफ़ व नीच का अन्तर मिट गया अब उनमें सबसे अच्छा, अच्छा काम करने वाला, उनका सरदार, उनको फ़ायदा पहुंचाने वाला और उनका सबसे सम्मानित, उनका सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी बन गया, क़ुरआन ने ऐलान कर दिया कि:

"लोगों हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और पहचान के लिये तुम्हें क़बीलों और जमाअतों में बांट दिया और अल्लाह के नज़दीक तुममे सम्मानित तुम्हारा मुत्तक़ी व्यक्ति है।"

और रसूलुल्लाह (स0अ0) ने आख़िरी हज के ख़ुत्बे के अवसर पर मानवीय समानता का इस प्रकार ऐलान कर दिया कि "लोगों! तुम सब आदम अलै0 की औलाद हो और आदम अलै0 मिट्टी के बने थे अब किसी अरबी को किसी अजमी पर श्रेष्ठता केवल तक़वे से प्राप्त होगी।"

ये घोषणा अरब के आगे की विजयों का नियम बन गयी इसलिये वो दूसरों के विपरीत नस्ल व क़ौम के भेदभाव से दूर रहे और पश्चिम व पूरब में उनके प्रभाव बने रहें। मुहम्मद (स0अ0) की दावत ने श्रेष्ठता और मुक़ाबले का मैदान, न्याय व सत्यता, भलाई व सुधार और केवल नेक अमल को घोषित कर दिया जैसा कि अल्लाह का इरशाद है कि: "नेकियों में सबक़त करो, तुम सबको अल्लाह के पास लौटना है जो तुम्हें तुम्हारे आमाल से बाख़बर करेगा।" इस प्रकार उम्मत ने क़बीले की, न्याय ने वर्चस्व की, समानता ने असमानता की और नेक कामों नें नस्ल के गर्व का स्थान ले लिया और मानव हृदय नफ़रत के बजाये मुहब्बत और भलाई का केन्द्र बन गये।

अरब के लोगों का दिल बहुत से ख़ुदाओं के बीच बंटा हुआ था जिनकी विशेषतांए उस पर स्पष्ट नहीं थीं। कभी वो उनकी ओर आकर्षित होता और कभी अनाकर्षित होता और उनसे भलाई चाहता, उसमें सफल न होता तो उन्हें छोड़ देता और गाली देता था जैसे आजकल सूडान के हब्शी "कजूर" देवता से बारिश मांगते हैं और कुछ देर इन्तिज़ार के बाद जब मायूस हो जाते हैं तो उसे क़त्ल कर देते हैं। अरबों के सामने जीवन व्यतीत करने का कोई स्पष्ट रास्ता और लोगों से मामला करने का कोई नक़्शा नहीं था इसलिये इस्लाम ने उन्हें ख़ुदा पर ईमान की दावत दी और हर मामले में हलाल व हराम की तमीज़ अता की।

इस तरह वो खुदा को और खुद को पहचानने लगे।

मुसलमानों के अक़ीदे ने उन्हें तौहीद व एकता का सबक़ सिखाया, उसने उन्हें बताया कि अल्लाह एक है, और लोगों कि अस्लियत एक है, और सब एक–दूसरे के बराबर हैं, इसी तरह सब क़ौमें एक समान हैं और पैग़म्बरों के सभी धर्म अस्ल में एक हैं और उनकी वास्तविकताओं और उद्देश्यों में कोई विरोधाभास नहीं। कुरआन कहता है: "अल्लाह ने तुम्हारे लिये वही दीन बनाया जिसकी वसीयत नूह को की थी और जो आप (स0अ0) को हमने वही की है उस तरह इब्राहीम व मूसा व ईसा को भी वही की थी कि इस दीन को क़ायम रखना और इसमें फूट न डालना।"

इसी प्रकार मुहम्मद (स0अ0) की दावत ने व्यक्ति व समूह के लिये एक नक़्शा–ए–अमल निश्चित किया और अरबों को एक करके एक क़ौम बना दिया और उन्हें तौहीद का पैग़ाम देकर इन्सानों के पास भेजा कि सब लोग एक उम्मत बन जायें और जब खुदा को मानने वालों की ये एक उम्मत तौहीद की दावत लेकर खड़ी हुई तो उसके सामने कोई चीज़ नहीं टिक सकी। उसके मुक़ाबले पर लोगों की अधिक संख्या, अस्लहों की अधिकता, बाप दादा की दीनी आस्था, बादशाहों की महानता व हैबत और अमीरों की शान व शौक़त कोई चीज़ नहीं ठहर सकी और वो अल्लाह की मर्ज़ी से अपनी मन्ज़िल तक पहुंची जिसे कोई रोक नहीं सकता। तौहीद का अक़ीदा और इसके विश्वव्यापी प्रभाव मेरे निकट मुहम्मद (स0अ0) की दावत का सबसे बड़ा चमत्कार व कारनामा है जिसे लोग समझना चाहें तो वो आज के अरब महाद्वीप को देखें जहां इस्लाम पर सदियां गुज़र चुकी हैं जहां एक हद तक जाहिलियत फिर पैदा हो गयी है जो इस्लाम से पहले वाली जाहिलियत से बहुत कम है लेकिन कोई उसके सुधार के लिये उठे तो उसे कितनी मुश्किल का सामना करना पड़ेगा?

बहुत से सुधारक तो उस सुधार की चौखट ही पर थक कर बैठ जायेंगे जिसे बरपा करने में मुहम्मद (स0अ0) की दावत केवल कुछ वर्षों ही में सफल हो गयी थी। जब आप वर्तमान स्थिति का इस्लाम के आरम्भ की स्थिति से मुक़ाबला करेंगे तब आपको मुहम्मद (स0अ0) की दावत की ताक़त और असर और इस उम्मत की ताक़त और मानव जाति पर उसके एहसानों का कुछ अन्दाज़ा होगा, मुहम्मद (स0अ0) की दावत तौहीद के साथ आज़ादी का पैग़ाम भी लायी थी जिसने अरबों और सभी इन्सानों को प्रभावित किया, मुहम्मद (स0अ0) ने "अल्लाहु अकबर" का नारा बुलन्द किया और इसके आगे हर महानता झुक गयी और इन्सान का बातिल नफ़्स भ्रम व खुराफ़ात और झूठी आस्था से आज़ाद हो गया और बन्दगी केवल अल्लाह के लिये हो गयी और लोग गैरुल्लाह से बेनियाज़ हो गये।

कुरआन के बयान के अनुसार अल्लाह तआला ही लोगों को हिदायत की तौफ़ीक़ देता है और उन्हें अंधेरे से रोशनी, जन्नत के दारुस्सलाम और सीधी राह की ओर बुलाता है और मोमीनीन के साथ रहम व करम का मामला करता है।

मुहम्मद (स0अ0) की दावत से पहले लोग बादशाह व अमीर, धार्मिक पेशवाओं और भ्रम व खुराफ़ात के गुलाम थे, जिनसे इस दावत के तुफ़ैल में जिस्मानी व रूहानी दोनों प्रकार से आज़ाद हो गये और उन्हें ये लाफ़ानी अक़ीदा मिला कि उनके आमाल बेकार नहीं होंगे बल्कि उन्हें उसका सिला मिलेगा।

इस दावत ने लोगों को बताया कि लाभ व हानि केवल अल्लाह के हाथ में है और इन्सान व उसके रब के बीच कोई वास्ता व वसीला नहीं बल्कि वो उससे उसकी रगेजां से भी ज़्यादा क़रीब है और उसके साथ हर जगह मौजूद है, दीन में कोई जबर नहीं और रसूल भी केवल शिक्षा व प्रशिक्षण के ज़िम्मेदार हैं, कुरआन में है कि: "आप (स0अ0) लोगों को याद दिलायें कि आप (स0अ0) सिर्फ़ याद दिलाने वाले हैं आप (स0अ0) उन पर मुसल्लत नहीं किये गये हैं।" दूसरी जगह कहा गया: "अगर वो मुंह फेरा करें तो हमने आप (स0अ0) को उनका निगरां बनाकर नहीं भेजा।" दावत के द्वारा इस प्रकार मानव ने अपना स्थान प्राप्त किया और दिल व नज़र और चिन्तन व मनन की स्वतन्त्रता प्राप्त की और मानव एकता व स्वतन्त्रता की राह में मुहम्मद (स0अ0) की दावत के स्थायी प्रभाव बना रहे।

इन्सान की नफ़्स जो उन्नति की राह हो सकती है उसके बारे में हज़रत अली (रज़ि0) रसूलुल्लाह (स0अ0) से रिवायत करते हैं "मारिफ़त मेरी पूंजी है, अक़्ल मेरे दीन की अस्ल है, मुहब्बत मेरी बुनियाद है, शौक़ मेरी सवारी है, अल्लाह का ज़िक्र मेरा साथी व हमदर्द है, अल्लाह पर भरोसा मेरा ख़ज़ाना है, रंज व ग़म मेरा दोस्त है, इल्म मेरा हथियार है, सब्र मेरी चादर है, अल्लाह की रज़ा मेरा माल–ए–ग़नीमत है, फ़ाक़ा मेरा गर्व है, सन्यास मेरा पेशा है, यक़ीन मेरी ताक़त है, सच्चाई मेरा सिफ़ारिशी है, इताअत व इबादत मेरा हस्ब व नस्ब है, जिहाद मेरा अख़लाक़ है और मेरी आंखों की ठन्डक नमाज़ में है।"

सफ़ों को ठीक करने का हुक्म

क़ारी अब्दुल बासित मुहम्मद

मस्जिद में जमाअत से नमाज़ अदा करना एक बड़ी नेकी भी है और इस्लाम के अहम तरीन वाजिबात में से एक वाजिब भी। किसी शरई ग़रज़ के बग़ैर मस्जिद न जाना और जमाअत से नमाज़ न अदा करना बड़ी महरूमी ही नहीं बल्कि कबीरा गुनाह भी है। सहाबा किराम के ज़माने में जमाअत की नमाज़ से ग़ैर हाज़िरी को मुनाफ़क़त समझा जाता था, चुनान्चे सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि0) से रिवायत है:

"हम तो ये देखते थे कि जमाअत से कोई ग़ैर हाज़िर न होता सिवाये मुनाफ़िक़ के जिसका निफ़ाक़ खुल्लम खुल्ला था और हम ये भी देखते थे कि कई (कमज़ोर) आदमी को दो आदमी सहारा देकर लाते और उसको सफ़ में खड़ा कर देते और तुममे से कोई नहीं है जिसकी मस्जिद उसके घर में न हो लेकिन अगर तुम घरों में नमाज़ पढ़ोगे और मस्जिदों को छोड़ दोगे तो तुम अपने नबी के तरीक़े को छोड़ दोगे और अगर तुम अपने नबी (स0अ0) के तरीक़े को छोड़ दोगे तो काफ़िर हो जाओगे।" (अबू दाऊदः 550)

मस्जिद में जाने और जमाअत से नमाज़ पढ़ने के लिये मुस्तक़िल आदाब हैं जो फ़िक़ की किताबों में मौजूद हैं और जिन्हें हदीसों से लिया गया है। इन आदाब में एक अहम अदब ये है कि पहले अगली सफ़ों को भरा जाये फिर बाद वाली सफ़ में खड़े होकर सफ़ बन्दी की जाये। अगर कोई नमाज़ी देर से मस्जिद में पहुंचे कि जमाअत खड़ी हो चुकी है तो उसे चाहिये कि जहां तक सफ़बन्दी हो चुकी है उसकी बाद वाली ख़ाली जगह पर खड़ा हो जाये और अपनी नमाज़ शुरू करे। सफ़ों में इस बात का ख़्याल रखा जाये कि दो नमाज़ियों के बीच कोई जगह ख़ाली न हो, एक दूसरे के कांधे मिले हों, पैर से पैर को मिलाना, कंधे से कंधे को मिलाना और एक दूसरे के साथ मिलकर खड़ा होना सफ़बन्दी और जमाअत के आदाब में से है। एक दूसरे से अलग या दूर रहकर या बीच में कुछ फ़ासला छोड़कर खड़ा होना न सिर्फ़ आदाब के ख़िलाफ़ है बल्कि इस बारे में सख़्त वईद आयी हैं। सफ़ों की दुरूस्तगी, सफ़ों का बिल्कुल सीधा होना और मिल जुल कर खड़ा होना नमाज़ के कमाल और तकमील (पूरा होने) की निशानी है। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः

"अपनी सफ़ें दुरुस्त और सीधी रखो क्योंकि सफ़ों की दुरुस्तगी और उनका सीधा होना नमाज़ के मुकम्मल और सही होने में से है।" (सही बुख़ारीः 723, सही मुस्लिमः 433, सुनन अबी दाऊदः 667 सुनन इब्ने माजाः 993)

सफ़ों में नमाज़ियों के दरमियान अगर ख़ाली जगह रह जायेगी और कोई नमाज़ी उसे भरेगा नही तो शैतान उस सफ़ में आ घुसेगा जैसा कि हदीसों में है:

"जब नमाज़ी सफ़ों में ख़ाली जगह छोड़ेगें और एक दूसरे के साथ मिल जुल कर खड़े न होंगे तो उनके दिलों को भी एक दूसरे से दूर कर दिया जायेगा। (मुसनद इमाम अहमदः 262/5, अबू दाऊदः 667)

मानो की सफ़ों में एक दूसरे के साथ मिल कर खड़े होने में अल्लाह तआला उन नमाज़ियों के दिलों को भी एक दूसरे से मिला देता है। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमायाः

"तुम लोग ज़रूर अपनी सफ़ों को बराबर या सीधी करो या फिर अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों में एक दूसरे की मुख़ालफ़त (विरोध) डाल देगा।" (बुख़ारीः 717, मुस्लिमः 436, अबूदाऊदः 663)

इमामुन्नववी ने फ़रमाया कि सफ़ों की सफ़बन्दी और जमाअत से नमाज़ की अदायगी में मुसलमान जितनी मुहब्बत व एकराम से एक दूसरे के साथ मिलकर खड़े होंगे और बीच में ख़ाली जगह न छोड़ेगें, उतना ही अल्लाह तआला भी उनके दिलों को जोड़कर रखेंगे और अगर सफ़ें सही न होंगी, बीच में जगह ख़ाली छोड़ दी जायेगी तो लोगों के बीच दुश्मनी, मुख़ालफ़त, नफ़रत

और आपस के झगड़े आम कर दिये जायेंगे।

(शरह मुस्लिम अलनववी : 220/1)

रसूल–ए–करीम (स0अ0) के बारे में सैय्यदना अलबरा बिन आज़िब (रज़ि0) फ़रमाते हैं:

"रसूल–ए–करीम (स0अ0) ख़ुद तशरीफ़ लाते और सफ़ों को ठीक फ़रमाते, नमाज़ियों के सीनों और कांधों को सीधा करते (यानि एक–दूसरे के साथ मिलाते और सीधा व बराबर करते) और फ़रमाया करते थे एक दूसरे से दूर न हो वरना तुम्हारे दिल एक–दूसरे से दूर हो जायेंगे। जो नमाज़ी अपनी सफ़ें दुरूस्त रखते हैं, सफ़ें बिल्कुल सीधी रखते हैं, एक दूसरे के साथ मिलकर सफ़ें बनाते हैं, सफ़ों में अगर ख़ाली जगह नज़र आ जाये तो उसे भर देते हैं, उनके लिये बशारतों, दुआओं और अज्र व सवाब वाली बहुत सी हदीसें मौजूद हैं।"

(सही इब्ने ख़ुज़ैमाः 26/3, अबूदाऊदः 664, मुसनद अहमदः 285/4)

मस्जिद के इमाम व ख़तीब (ख़ुत्बा देने वाल) और मस्जिद के ज़िम्मेदारों की ज़िम्मेदारी है कि इक़ामत (जमाअत के खड़े होने से पहले दी जाने वाली अज़ान) से पहले या इक़ामत के बाद नमाज़ शुरू होने से पहले सफ़ों को ठीक करायें, नमाज़ियों को एक दूसरे के साथ मिलकर खड़े होने की ताकीद करें और बीच में ख़ाली जगह न रहने दें और सफ़ों को ठीक करें।

नमाज़ियों को इस बात की तलक़ीन भी कर दी जाये कि अगर ग़लती से किसी सफ़ में या नमाज़ियों के बीच कोई जगह ख़ाली रह गयी तो नमाज़ पढ़ने के दौरान भी नमाज़ी अपनी जगह से हरकत कर सकता है और अपने दायें–बायें ख़ाली जगह भर सकता है। अगर नमाज़ के दौरान कोई दूसरा शख़्स भी आपको दायें–बायें खिसकाये ताकि ख़ाली जगह भर जाये तो आप उसके साथ सहयोग कीजिये और नमाज़ के दौरान दायें–बायें होकर ख़ाली जगह भर दीजिये। इसी तरह अगर बीच में जगह ख़ाली है और बाद में आने वाला नमाज़ी यहां खड़े होकर नमाज़ में शामिल होना चाहे तो पहले से नमाज़ पढ़ने वाले नमाज़ी को चाहिये कि वो उसके साथ सहयोग करते हुए उसको अपने साथ खड़ा होने दे। हमारे यहां एक बड़ी कमज़ोरी ये है कि नमाज़ी नमाज़ के दौरान अपनी जगह से हिलने को ग़लती व गुनाह समझता है जबकि शरीअत में ऐसा नहीं है। आप नमाज़ के दौरान जायज़ हद तक हरकत कर सकते हैं। जिस किसी ने सफ़ों में ख़ाली जगह देखकर उसे भर दिया उसके लिये पांच अहम और अज़ीमुश्शान बशारतें हैं।

"जिस किसी ने सफ़ को मिलाया अल्लाह तआला उसे मिलाये यानि ख़ैर व बरकत दे और उसके सारे काम कर दे।"

(अबू दाऊदः 666, इब्ने ख़ुज़ैमाः 23/3, नसईः 93/2)

"किसी भी नेकी के लिये चल कर जाने में वो अज्र व सवाब नहीं है जो सफ़ों में ख़ाली जगह देखकर चल कर जाते हुए उसे भर देने और पुर कर देने में है।"

(मुसनद मुज़मारः 512, इब्ने हब्बानः 694, मुजम्मअ ज़वाएदः 90/2)

"जो सफ़ की ख़ाली जगह भर देता है, अल्लाह तआला उसके दर्जे बुलन्द कर देते हैं और उसके लिये जन्नत में घर बना देते हैं।"

"जो सफ़ की ख़ाली जगह भर देता है उसके गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं।"

(मुसनद–ए–बज़ारः 511, मुजम्मअ ज़वाएदः 91/2)

"उस शख़्स का चलना अल्लाह तआला को सबसे पसंद है जिसने सफ़ की ख़ाली जगह देखी और चल कर उसे भर दिया।" (मुसतदरक हाकिमः 272/1)

बशारत व अज़ीम अज्र व सवाब वाली इन हदीसों से हमें सबक़ और दर्स लेना चाहिये कि हम अपनी मस्जिदों की जमाअतों में सफ़ों को ठीक करने की ओर ध्यान दें क्योंकि समाज में सामूहिक सुधार और मुसलमानों का आपस में मिल–जुल कर व मुहब्बत से रहना इन्हीं सफ़ों की दुरुस्ती और सुधार पर आधारित है। अगर मस्जिदों में सफ़ों के बीच फ़ासला रहेगा तो लोगों के दिल भी एक–दूसरे से दूर कर दिये जायेंगे जैसा कि हमारे समाज में ये अज़ाब हम पर हमारी ही कमज़ोरियों और नाफ़रमानियों के कारण से मुसल्लत है। लिहाज़ा आइये कि हम सब मिलजुल कर एक दूसरे का सम्मान करें और अपने दिलों को साफ़ करें, नमाज़ के दौरान मिलजुल कर एक दूसरे के साथ खड़े हों ताकि अल्लाह तआला हम पर रहम फ़रमाये और हम सब के दिलों को जोड़ दे।

इस्राईल के ज़ुल्म की दास्तान

ख़लील अहमद हसनी नदवी

अल्लाह तआला ने इन्सान को सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है। सभी प्राणियों में इसको सबसे सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया है। इरशाद फ़रमायाः "और यक़ीनन हमने आदम की औलाद को इज़्ज़त बख़्शी।" दूसरी जगह इरशाद हैः "हमने इन्सान को बेहतरीन सांचे में (ढाल कर) पैदा किया।" रसूलुल्लाह स0अ0 का इरशाद हैः (क़यामत के दिन अल्लाह तआला के यहां सबसे ज़्यादा मुअज़्ज़ज़ और मुकर्रम बनी आदम होंगे आप स0अ0 से पूछा गया कि फ़रिश्ते भी नहीं होंगे?आप स0अ0 ने फ़रमायाय, मलाएका भी नहीं होंगे क्योंकि मलाएका सूरज और चांद की तरह मजबूर हैं)

लेकिन दूसरी ओर मनुष्य ने अल्लाह तआला के दिये हुए इस ओहदे का लिहाज़ नहीं रखा। जिन विशेषताओं के आधार पर उसको यह महान स्थान प्राप्त हुआ था, उसने उन विशेषताओं को अधिकतर भुला दिया है और उसके परिणाम में वह खूंखार दरिन्दे की श्रेणी में गिना जाने लगा है, जिसके निकट एक जानवर की जान का मूल्य एक मनुष्य की जान के मूल्य से कहीं ज़्यादा है। इसका सुबूत वह विरोध है जो एक कुत्ते के मारे जाने पर मिस्र में हुआ। जिसको उस व्यक्ति ने मार दिया था जिसको उसी कुत्ते ने काट लिया था। उस ज़ख़्मी मनुष्य का इलाज कराने के बजाए, सुहानुभूति प्रकट करने के बजाए, ज़ख़्म पर मरहम रखने के बजाए, उसके ज़ख़्म पर नमक छिड़का जा रहा है, क्या यही मानवता है? कुरआन ऐसे इन्सानों को सम्बोधित करते हुए कहता हैः "ये जानवर जैसे हैं बल्कि उससे भी ज़्यादा गये गुज़रे हैं।" ये तस्वीर का एक पहलू है जो मैंने आपको अभी दिखाया, दूसरा चेहरा, सहयूनी और यहूदी अत्याचारों पर पूरी दुनिया की ख़ामोशी ही नहीं बल्कि उनकी कार्यवाहियों और उनके अत्याचारों को सही ठहराने का काम है। इससे पता चलता है कि इन्सान की इन्सानियत बिदा हो चुकी है। वो हमदर्दी और एहसास के जज़्बे से महरूम कर दिया गया है। फ़िलिस्तीन को एक अलग देश का दर्जा न देना, वहां के नागरिकों को उन्हीं के देश में जीना मुश्किल कर देना, उनके मकानों को बुल्डोज़रों से ध्वस्त करना, उनकी मस्जिदों को शहीद करनाय, बाहर की दुनिया से उनका सम्पर्क काट देना, दाने–दाने का मोहताज कर देना, उनको नौकरी के लायक़ न छोड़ना, उनकी आबादियों पर बम गिराना, उनको टार्चर करना, उन पर अत्याचार के पहाड़ तोड़ना, उनसे ज़िन्दा रहने का हक़ छीन लेना, ये तो वो बातें हैं जिस पर पूरी दुनिया ख़ामोश तमाशाई बनी बैठी है, रोज़ अख़बार पढ़िए, साप्ताहिक पत्रिकाओं का अध्ययन कीजिए, न्यूज़ चैनल पर ख़बरे सुनिए, यही सुनने को मिलेगा कि आज इतने फ़िलिस्तीनी शहीद हो गये, आज इतने फ़िलिस्तीनी बेघर हो गये, आज इतने मासूम बच्चे जिन्होंने अभी तक चलना भी नहीं सीखा था, बोलना तो बहुत दूर की बात है, वो बाप की शफ़क़त और मां की ममता ये महरूम हो गये, आज इतने घर ज़मीन में धंसा दिए गये, इतने अस्पतालों पर आज बम गिराए गये, वहां मरीज़ों के साथ–साथ इतने तीमारदार भी मौत का निवाला बन गये। कहा जाता है कि हर दावे के लिए सुबूत की आवश्यकता है, इन सच्चाइयों का सुबूत वो इतिहासिक आंकड़े हैं जो किसी भी व्यक्ति से छिपे हुए नही हैं, ये आंकड़े हमको वास्तविकता से परिचित कराते हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रवक्ता ने फ़िलिस्तीन की ख़स्ताहाली का रोनारोते हुए ये बताया कि एक हास्पिटल के स्टाफ़ में से 25 लोग काबिज़ यहूदियों की दरिन्दगी का निशाना बने, और 200 लोग अत्यधिक ज़ख़्मी हुए, एक अख़बार की सुर्खी को देखिए कि स्वास्थ्य मंत्रालय को मजबूरी में अपने लोगों की जान की सुरक्षा में चार अहम हास्पिटल को बन्द करना पड़ा। क्योंकि इस्राईल का अधिकतर निशाना यही हास्पिटल बन रहे थे। इसी तरह स्वास्थ्य मंत्रालय को 27 अस्पताल को भी न चाहते हुए बन्द करना पड़ा, एक ख़बर ये भी देखिए, 36 ऐसी एम्बुलेंस को इस्राईल ने डायरेक्ट निशाना बनाया जिसमें मौजूद ज़ख़्मियों को तीमारदार इस उम्मीद में हास्पिटल ले जा रहे थे कि शायद कोई मोजज़ा ज़ाहिर हो और उनकी जान बच जाए .....

(शेष पेज 16 पर)

इस्लाम की सही तस्वीर प्रस्तुत करने की आवश्यकता

अब्दुल्लाह ख़ालिद क़ासमी ख़ैराबादी

आजकल बड़े ज़ोर शोर से भारत में साम्प्रदायिक तत्व ये प्रोपगन्डा कर रहे हैं कि इस्लाम और उसके मानने वाले दूसरे धर्म वालों को बर्दाश्त करने के रवादार नहीं। इसीलिये घर वापसी के विषय से भारतीय मुसलमानों और दूसरे अल्पसंख्यकों के धर्म परिवर्तन की एक असंवैधानिक मुहिम जारी है और भारतीय समाज के सुख व शांति को समाप्त किया जा रहा है। हालांकि यह एक गुमराह करने वाली बात है। इसका वास्तविकता से कोई संबंध नही। यह इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करने की अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र का एक भाग है। बात ये है कि इस्लाम रहमत का दीन है। उसकी रहमत व मुहब्बत का दामन सारी मानवता के लिये व्यापक है। इस्लाम ने अपने मानने वालों को सख़्त हिदायत दी है कि वे दूसरी क़ौमों व धर्मवालों के साथ समानता, हमदर्दी, दुख बांटने व भाइचारे का मामला करें और इस्लामी राज्य में उनके साथ किसी भी प्रकार की ज़्यादती, भेदभाव व किसी भी प्रकार का अन्तर न किया जाये। उनकी जान व माल, इज़्ज़त व आबरू, माल व जायदाद और मानवाधिकारों की सुरक्षा की जाये। कुरआन पाक का इरशाद है:

"अल्लाह तुमको मना नहीं करता उन लोगों से जो लड़े नहीं दीन के सिलसिले में और निकाला नहीं तुमको तुम्हारे घरों से और उनके साथ करो भलाई व इन्साफ़ का सुलूक, बेशक अल्लाह चाहता है इन्साफ़ वालों को।" (सूरह मुमतहिन्नाः 8)

इस आयत की तफ़सीर में हज़रत अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह0 लिखते हैं कि: "मक्का में कुछ लोग ऐसे भी थे जो मुसलमान न हुए और मुसलमान होने वालों से कोई ज़िद और बैर भी नहीं रखा और न दीन के मामले में उनसे लड़े, न उनको सताने में और निकालने में ज़ालिमों का साथ दिया, इस तरह के ग़ैर मुस्लिमों के साथ भलाई से पेश आने को इस्लाम नहीं रोकता। जब वे तुम्हारे साथ नर्मी और भाईचारे से पेश आते हैं तो न्याय यही है कि तुम भी उनके साथ अच्छा बर्ताव करो और दुनिया को दिखला दो कि इस्लाम में व्यवहार का स्तर कितना श्रेष्ठ है। इस्लाम की शिक्षा ये नहीं कि अगर ग़ैर मुस्लिमों की एक क़ौम मुसलमानों से लड़ती झगड़ती नहीं है तो भी मुसलमान सभी ग़ैर मुस्लिमों को एक ही लाठी से हकेलना शुरू कर दें। ऐसा करना शासन व न्याय के विपरीत होगा।

दूसरे धर्म वालों के साथ सहयोग व असहयोग का इस्लामी नियम यही है कि उनके साथ मिलेजुले सामाजिक व राष्ट्रीय समस्याओं जिनमें शरई दृष्टिकोण से सहयोग करने में कोई मनाही न हो तो उनमें उनका साथ देना चाहिये।

दूसरे धर्मों या क़ौमों के कुछ लोग अगर मुसलमानों से सख़्त नफ़रत व दुश्मनी रखते हैं तो भी इस्लाम ने उनके साथ भाईचारगी की शिक्षा दी है। अल्लाह तआला का इरशाद है:

"बदी का बदला नेकी से दो फिर जिस शख़्स के साथ तुम्हारी दुश्मनी है वह तुम्हारा सहयोगी बन जायेगा।" (सूरह फ़ुस्सिलतः 24)

भारत का वर्तमान सामाजिक व आर्थिक माहौल ऐसा बनाया जा रहा है जिसमें धर्मों में परस्पर नफ़रत की भावना को बढ़ावा दिया जा रहा है। एक दूसरे के धार्मिक व संवैधानिक अधिकारों पर डाका डाला जा रहा है। सत्ता के ज़ोर पर धर्म परिवर्तन करने पर मजबूर किया जा रहा है और सरासर संवैधानिक अधिकारों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं।

इस्लाम की स्वाभाविक शिक्षा ऐसे हालात में यही है कि तुम्हारे धर्म और तुम्हारी धार्मिक पहचान से घृणा करने वाले जो लोग हैं उनकी भ्रांतियां दूर की जाएं। इस्लामी शिक्षा से उनको परिचित कराया जाए। उनको बताया जाये कि इस्लाम अमन व शांति व कृपा का संदेशवाहक है। इसकी शिक्षाओं में पूरी मानवता के लिए सुख व शांति है। इस्लाम किसी वर्ग विशेष या जमाअत विशेष के लिये मार्गदर्शन नहीं करता है बल्कि उसके दामन में पूरी मानवता को सुकून मिलेगा।

आज जो ये हालात पैदा हुए हैं और हो रहे हैं इसमें बहुत बड़ा कारण इस बात का है कि इस्लाम की सही और सच्ची तस्वीर हम मुसलमान दूसरों के सामने नहीं प्रस्तुत कर पा रहे हैं और इसका प्रयास भी नहीं हो रहा है। यदि इस ओर क़दम उठाया जाये और इस समय इस्लाम के प्रचार व प्रसार के विषय से इसको कर्तव्य के तौर पर अपनाया जाए तो यक़ीन है देश के दूसरे भाइयों की

भ्रांतियां अवश्य दूर होंगी और उनकी दुश्मनी में अवश्य कमी आयेगी।

हमारी धार्मिक पहचान में एक बहुत बड़ी चीज़ पांच वक़्त की नमाज़ों के लिये अज़ान है। पूरे देश के लगभग सभी क्षेत्रों में (जहां दो चार घर भी मुसलमानों के हैं) अज़ान दी जाती है। ग़ैर मुस्लिम भाई इससे भय महसूस करते हैं। जिहालत और हमारी ग़फ़लत के कारण अधिकतर लोगों के ज़हन में ये बात है कि "मुसलमान अज़ान के ज़रिये मुग़ल बादशाह अकबर को याद करते हैं।"

आवश्यकता इस बात की है कि अज़ान का अर्थ एवं उसका संदेश उन्हें उनकी ज़बान में समझाने का प्रयास किया जाये। उनको बताया जाये कि यद्यपि ये इस्लामी पहचान है लेकिन अगर इसके अर्थ को देखा जाये तो सरासर हम सबके पैदा करने वाले और सबको पालने वाले परवरदिगार की बड़ाई का ऐलान है। जिस ज़ात ने हम सबको पैदा किया फिर जीवन व्यतीत करने के लिये सारी सुविधाएं उपलब्ध करायीं, अक़्ल व समझदारी की बात तो यही है कि पूजा और इबादत और बन्दगी केवल उसी की होनी चाहिये। इस अज़ान में इसी बात का स्वीकार्य है। इन्सानों की हिदायत और दुनिया व आख़िरत मे सुकून और चैन का जीवन मिले इसी क्रम की शिक्षा और आदेशों को लेकर अल्लाह की ओर से जिस पवित्र व्यक्ति को दुनिया में भेजा गया उसकी रिसालत व नुबूव्वत की शहादत व गवाही उस अज़ान में है। दुनिया व आख़िरत की भलाई व कामयाबी उसी पालनहार और अस्ल माबूद के बताए हुए इबादत के तरीक़े में है। अज़ान में उसी इबादत की तरीक़े की ओर बुलाया जाता है और दुनिया को रोज़ाना पांच वक़्त यही सब याद दिलाया जाता है।

अस्ल माबूद को सबसे बड़ा मानना, उसी को अस्ल माबूद जानना, इन्सानों की भलाई के लिये उसके भेजे हुए पैग़म्बर व रसूल व अवतार की रिसालत व नुबूव्वत की गवाही देना, दुनिया व आख़िरत की भलाई व सफ़लता वाले इबादत के तरीक़े की ओर लोगों को बुलाना, यही तो अज़ान का ख़ुलासा है। यदि सही रूप से इसकी व्याख्या की जाए, इसके अर्थ को बताया जाए तो यक़ीनन जो इससे भयभीत होते हैं वे भी इन शब्दों के सुनने वाले बन जाएंगे। आपसी नफ़रत समाप्त हो जायेगी।

लेकिन इसके लिये ज़रूरी है कि हम मुसलमान पहले ख़ुद अज़ान के अर्थ को जाने और उसकी मांग से परिचित हों। हम पहले ख़ुद ये जान लें कि अज़ान की बरकतें क्या हैं?दुनिया में उसके क्या फ़ायदे हैं?अज़ान का प्रभाव क्या है?अफ़सोस की बात है कि हम दावत वाली उम्मत होकर भी अज़ान तक के अर्थ से परिचित नहीं हैं तो इस्लाम की दूसरी पहचानों के बारे में हमारा क्या हाल होगा?

भारत के वर्तमान हालात में इस बात की अत्यधिक आवश्यकता है कि आपसी सहयोग का वातावरण उत्पन्न किया जाए। ग़ैर मुस्लिम भाइयों को अपने से क़रीब किया जाए। इस्लामी शिक्षाओं की उनकी भाषा में व्याख्या की जाए ताकि इस्लाम की स्वाभाविक शिक्षाओं को ये लोग जानें और उनका भय और उनकी नफ़रत समाप्त हो। और ये उसी समय संभव है जब हम स्वयं अपने धर्म एवं उसकी शिक्षाओं का ज्ञान रखेंगे। उनको सीखने और स्वयं पर लागू करने का प्रयास करेंगे।

शेष : इस्राईल के ज़ुल्म की दास्तान

..... अख़बार से पता चलता है कि फ़िलिस्तीन में जो दवाए सप्लाई की जा रही है, वो या तो एक्सपायर हो चुकी हैं, या हमेशा की नींद सुलाने वाले तत्व ज़्यादा मिलाए जा रहे हैं। सही दवाओं को मरीज़ों तक पहुंचने ही नहीं दिया जा रहा है। एक संस्था की रिपोर्ट ने ये भी बताया कि बीमारों और ज़ख़्मियों को सहायता से, खाद्य पदार्थों से और पीने की वस्तुओं से वंचित किया जा रहा है।

और सितम पर सितम ये कि ये सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है, बल्कि बढ़ता चला जा रहा है। वर्तमान हालात से परिचित व्यक्ति ख़ूब जानता है कि क़ाबिज़ यहूदियों का मिशन क्या है, उनका मन्सूबा क्या है, और इस मन्सूबे को पूरा करने के लिये वो क्या प्लानिंग कर रहे हैं। उनके साथ कौन–कौन है। वो ये भी जानता है कि इस ख़ूनी खेल में बहुत से इस्लामी देश भी उसका साथ दे रहे हैं। कुछ हैं जिनको अपनी कुर्सी बचाने के लिये ऐसा करना पड़ रहा है। ये वो है जो सत्ता के पुजारी, नफ़्स के ग़ुलाम, इच्छाओं की पैरवी करने वाले और दीन के बदले दुनिया ख़रीदने वाले हैं। कुरआन करीम ऐसे लोगों के बारे में ये ऐलान करता है:

"यही वे लोग हैं जिन्होंने दुनिया को आख़िरत के बदले ख़रीद लिया।"

माँ का मक़ाम

मौलाना मआज़ अहमद

अल्लाह तआला कुरआन करीम में इरशाद फ़रमाते हैं: "हमने इन्सान को अपने मां–बाप के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म दिया है।" उसकी मां ने उसको बड़ी मशक़्क़त के साथ पेट में रखा और बड़ी तकलीफ़ के साथ उसको जना। एहसान के माने अच्छा सुलूक करना, जिसमें ख़िदमत व इताअत, ताज़ीम व तकरीम सब दाख़िल हैं। इस आयत के अलावा कुरआन करीम की बहुत सी आयत मुख़्तलिफ़ सूरतों में इस बात की गवाह हैं कि अल्लाह तआला ने मां और बाप दोनों के साथ हुस्ने सुलूक और रवादारी का हुक्म दिया है। मां की ख़िदमत और उसके साथ हमदर्दी की ख़ास तरग़ीब दी है। और अहादीस में साफ़ तौर पर मां के हक़ को बा पके मुक़ाबले में तीन गुना ज़्यादा बताया गया है। जैसा कि हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 बयान फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नबी करीम स0अ0 से सवाल किया ऐ रसूले खुदा! सबसे ज़्यादा मुस्तहक़ मेरे नेक सुलूक का कौन शख़्स है। आप स0अ0 ने जवाब दिया, तुम्हारी मां, उसने दोबारा पूछा तो आप स0अ0 ने फ़रमाया, तुम्हारी मां, उस शख़्स ने फिर सवाल किया तो आप स0अ0 ने फिर जवाब दिया तेरी मां, उस शख़्स ने चौथी बार पूछा फिर कौन?आप स0अ0 ने फ़रमाया, तेरा बाप।

एहसान और हमदर्दी में मां का हक़ बाप पर मुक़द्दम इस वजह से है कि मां के एहसानात और कुर्बानियां बा पके मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा हैं। एक मां ने अपने बच्चे के लिये ऐसी मशक़्क़तें उठायीं हैं जो सिर्फ़ मां का हिस्सा है। बाप उससे वाक़िफ़ नहीं होता बल्कि वो उन तकलीफ़ का सही अन्दाज़ा भी नहीं कर सकता।

1– गर्भ के समय मां नौ महीने तक अपने बच्चे को अपने पेट में उठाए रखती है और पीहम दुख उठाती है। कमज़ोर से लाग़र हो जाती है और बेआरामी और मशक़्क़त में कभी इस करवट कभी उस करवट जाग–जाग कर पूरा ज़माना गुज़ारती है, मगर उन तकलीफ़ों में बाप की कोई शिरकत नहीं होती। इसी का नक़्शा कुरआन करीम ने बड़े निराले अन्दाज़ में खींचा है। "उसकी मां ने गर्भ के समय तकलीफ़ों और मशक्क़त के साथ गर्भ का बोझ उठाया।"

2– पैदाइश के समय मां की जान ज़िन्दगी और मौत के बीच हिचकौले खाती है और वो दर्द की सख़्त तकलीफ़ बर्दाश्त करती है, लेकिन इस तकलीफ़ में भी बाप का कोई हिस्सा नहीं होता। इसी को कुरआन करीम ने इन शब्द में बयान फ़रमाया "और पैदाइश के समय तकलीफ़ के साथ जना।"

3– हमल और पैदाइश की मशक़्क़त के बाद भी मां की तकलीफ़ दूर नहीं क्यों कि बच्चे का खाना भी कुदरत ने मां की छाती में उतारा है। एक दो दिन नहीं बल्कि सैकड़ों दिन मां अपना खूने जिगर दूध की शक्ल में पिलाती है। उसमें भी बाप की ज़र्रा बराबर शिरकत नहीं होती। उसी पर बस नहीं बल्कि एक लम्बी मुद्दत तक बहुत ही शफ़क़त से बच्चे की परवरिश करती है।

हज़रत उवैस क़रनी रह0 अपनी मां की ख़िदमत में लगे रहने की वजह से आप स0अ0 के दीदार व मुलाक़ात व सहाबियत का शर्फ़ हासिल न कर सके लेकिन मां की ख़िदमत उन्हें ये सिला मिला कि अल्लाह के रसूल स0अ0 ज़बान मुबारक से उनको ख़ैरुल ताबईन का लक़ब अता हुआ और आप स0अ0 ने हज़रत उमर रज़ि0 से फ़रमाया कि ऐ उमर! उवैस से अपने लिये दुआ कराना, इसलिये कि वो जब भी अल्लाह के सामने हाथ उठाता है तो अल्लाह उसके हाथों को ख़ाली वापिस नहीं करता। ये फ़ज़ीलत हज़रत उवैस क़रनी रह0 को मां की ख़िदमत की बदौलत अता हुई।

लिहाज़ा चाहिए कि हमारा सीना वालिदैन की अज़मत व मुहब्बत से लबरेज़ हों। हम दिल की गहराइयों से उनके शुक्रगुज़ार हों, जब भी उनके तरफ़ निगाह उठे मुहब्बत भरी निगाह उठे, क्योंकि ये भी हमारे लिये सवाब है। अल्लाह के रसूल स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया, "जो शख़्स अपने वालिदैन पर मुहब्बत भरी निगाह डालता है, अल्लाह तआला इसके बदले में उसको हज्जे मक़बूल का सवाब अता फ़रमाता है, लोगों ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल स0अ0! अगर कोई शख़्स एक दिन में सौ बार मुहब्बत की निगाह डाले? आपने फ़रमाया अगर सौ बा रनज़रे रहमत करेगा तो सौ हज्जे मक़बूल का सवाब हासिल करेगा।

वालिदैन ख़ासकर मां की ख़िदमत वो अज़ीम नेमत है जो कि अगर पूरी दुनिया एक तरफ़ हो और ये नेमत एक तरफ़ तो मां की ख़िदमत ही को तरजीह दी जाएगी, याद रखिए मां के लिए शरई हद में रहकर हर चीज़ को छोड़ा जा सकता है, मगर किसी चीज़ के लिए मां को नहीं छोड़ा जा सकता है।

अबु ग़ुरैब
ABU GHRAIB

मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

बग़दाद शहर से बीस मील की दूरी पर स्थित अबु ग़ुरैब जेल एक लम्बे अर्से से हक़ व इन्साफ़ का गला घोंटने और मुसलमानों पर अनुचित अत्याचार करने का केन्द्र रहा है। अमरीकी नक़्शे के अनुसार बिट्रेन के इन्जीनियरों ने 1960 की दहाई में इस जेल का निर्माण किया था। जिसका बाह्य उद्देश्य खूंखार मुजरिमों को सुधारना था।

सद्दाम हुसैन के शासनकाल में इस जेल का भरपूर प्रयोग हुआ। सद्दाम हुसैन अपने ऐसे विरोधियों जिन्हें वह मौत से बदतर ज़िन्दगी देना चाहता उसे इस क़ैद ख़ाने में भेज देता। सबसे अधिक कुर्द और शिया बाग़ी इस क़ैदख़ाने का ईंधन बने। जहां बिजली के झटके दिए जाते, सोने पर पाबन्दी लगा दी जाती, हाथ–पैर उल्टे जकड़ दिए जाते, लिंग काट दिया जाता और अंधेरी कोठरी में एक अन्जान मुद्दत तक के लिये ठूंस दिया जाता।

अक्टूबर 2002ई0 में अमरीका ने ईराक़ की ईंट से ईंट बजा दी और सद्दाम हुसैन का शासन काल समाप्त हो गया। इसी बीच लगभग दस हज़ार ईराक़ियों की भीड़ ने अबु ग़ुरैब की ओर मार्च किया और क़ैदियों की रिहाई की कोशिश की। इस भीड़ के सामने सद्दाम हुसैन की कमज़ोर शासन ने फ़ौरन घुटने टेक दिए और सभी क़ैदियों की रिहाई का फ़रमान जारी कर दिया गया और ज़ाहिर में उस क़ैद ख़ाने की क़िस्मत पर ताला लग गया।

लेकिन 2003ई0 में उस क़ैदख़ाने की एक नयी दास्तान का आरम्भ हुआ। अमरीका ने इस क़ैद ख़ाने को पूरी तरह से अपने क़ब्ज़े में ले लिया और फिर अलक़ायदा के बाग़ियों के नाम पर मासूमों को उसमें ठूंसा जाने लगा। अमरीका के रक्षा सचिव रोनाल्ड रम्सफ़ील्ड ने पूरे तौर पर अत्याचारी रवैया अपनाया और यह जेल उन सरफ़िरे अफ़सरों के हवाले कर दिया जिन्हें न केवल ज़ुल्म करने में मज़ा आता था बल्कि उनके दिलों में मुसलमानों के लिये नफ़रत कूट–कूट कर भरी थी। फिर क्या था था अबूग़ुरैब के पिंजरो से ज़ुल्म की नयी–नयी दास्ताने वजूद में आने लगीं जिन्हें सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं और होश व हवास गुम हो जाते हैं। ऐसी–ऐसी हौलनाक तस्वीरें और वीडियो प्रसारित हुए जिन्हें देखने की ख़ुद जार्ज बुश में ताब नहीं थी।

कुछ महीनों के बाद ही इस राज़ से पर्दा उठा कि अमरीका के वहशी नुमाइन्दे सुधार के नाम पर मासूमों पर ज़ुल्म व सितम करने के नये–नये तरीक़े ईजाद कर रहे हैं। 2003ई0 में Amnesty International (मानवाधिकार की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था) Associated Press (अन्तर्राष्ट्रीय न्यूज़ एजेंसी) फिर 2004ई0 में Taguba Report (अमरीकी सेना की रिपोर्ट) और फिर Ghosts of AbuGhraib डाक्यूमेन्ट्री फ़िल्म तैयार की गयी, जिसे स्वयं अमरीकी इलेक्ट्रानिक न्यूज़ व पत्रिका डपदनजमे ७ ने अप्रैल 2004ई0 के अन्त में प्रसारित किया। ख़बर और तस्वीरों ने इन्सानी दुनिया को हिला कर रख दिया और ये सोचने पर मजबूर कर दिया कि मुस्लिम दुश्मनी में यहूद व नसारा किस हद तक जा सकते हैं?

जो तस्वीरें सामने आयीं उसमें एक व्यक्ति के दोनों हाथ में बिजली का तार बंधा हुआ है और उसे एक टीन के डिब्बे पर खड़ा किया गया है, कुछ नंगे क़ैदियों को पिरामिडनुमा बनाकर अमरीकी अफ़सर बैठे हुए तस्वीरें उतरवा रहे हैं। कहीं क़ैदियों की गर्दन में कुत्तों की तरह पट्टा बांधकर उन्हें घसीटा गया है। कहीं उन पर कुत्ते छोड़ दिए गये हैं तो कहीं पीठ पर दोनों हाथ को बांधकर कलाइयों से लटका दिया गया है। मुलाक़ात के लिये आने वाले माता–पिता के सामने उनके बच्चों का यौन उत्पीड़न किया जा रहा है।

इस प्रसारण की बहुत तेज़ प्रतिक्रिया हुई। दुनिया के हर क्षेत्र से विरोध के स्वर उठने लगे और सख़्त कार्यवाही की मांग होने लगी। बहरीन के अंग्रेज़ी अख़बार Daily Tribune में उन तस्वीरों और ख़बरों के प्रसार से सारे अरब देशों में अत्यधिक विरोध होने लगा। अमरीकी रक्षा सचिव के इस्तीफ़े की मांग होने लगी। लेकिन बावजूद यह कि डोनाल्ड रम्सफ़ील्ड ने अपने जुर्म का इक़रार किया, उसके ख़िलाफ़ कोई कार्यवाही नहीं हुई। दर्जनों हैवान नुमा अफ़सरों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्यवाहियों के बजाए केवल ख़ानापूरी की सज़ाए दी गयीं और दुनिया की शांति के ठेकेदार जार्ज बुश ने पूरे अफ़सोस के इज़हार के साथ Sorry कह दिया और मामला ख़त्म!!

अराकान के पीड़ित मुसलमान

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

अराकान (म्यांमार) के मुसलमानों पर जुल्म व सितम का सिलसिला जारी है, बल्कि इसमें तेज़ी आती जा रही है। अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी ने पूरी तरह ख़ामोशी अपना रखी है। मीडिया ने ख़बरों पर पर्दा डाल दिया है। मानवाधिकार की संस्थाओं ने ग़फ़लत अपना ली है। केवल सोशल मीडिया के द्वारा ही इन पीड़ितों की दास्तान दुनिया तक पहुंच रही है। ये क्रम पिछली कई दहाइयों से जारी है।

बुद्धिस्टों का दावा है कि अराकान में बसने वाला मुसलमान बाहर से आयी हुई क़ौम है और जिस तरह स्पेन से मुसलमानों को निकाला गया है उसी प्रकार अराकान से भी उन्हें बाहर किया जाएगा। जबकि अराकान समेत दुनिया के सभी क्षेत्रों की वास्तविकता ये है कि मुसलमानों के प्रचार व प्रसार और इस्लाम के असर से वहां के लोगों ने स्वयं इस्लाम कुबूल किया है और किसी धर्म को अपनाने से कोई क़ौम अपने देश से वंचित नहीं हो सकती है। वरना आज दुनिया के अधिकतर क्षेत्रों में ईसाईयत है जिसका आरम्भ येरूशलम से हुआ था, इसी प्रकार स्वयं गौतम बुद्ध की पैदाइश भारत में हुई थी और यही उनके कार्यक्षेत्र का केन्द्र था।

ख़लीफ़ा हारून रशीद के युग में मुसलमान व्यापारियों की हैसियत से अराकान पहुंचे, इस्लाम की स्वाभाविक शिक्षाओं से प्रभावित होकर यहां की अधिकतर आबादी ने इस्लाम कुबूल कर लिया। 1430ई0 में सुलेमान शाह के हाथों इस्लामी शासन की नीवं पड़ी, जो लगभग साढ़े तीन सदी तक रही। मस्जिदें आबाद होती रहीं, मदरसे और मकतबों की व्यवस्था चलती रही उनकी अपनी करेन्सी चलन में आयी जिस पर पहला कलिमा छपा हुआ था और उसके नीचे ख़ुल्फ़ाए राशिदीन के नाम दर्ज होते थे।

अराकान के पड़ोस में बुद्धिस्ट देश म्यांमार स्थित था जिसकी नज़र में अराकान की मुस्लिम सत्ता हलक़ में कांटे की तरह थी। इसीलिये 1784 में बुद्धिस्टों ने अराकान पर हमला कर दिया, उसकी ईंट से ईंट बजा दी, और उसे अपने देश में सम्मिलित कर लिया।

इत्तेफ़ाक़ की बात की 1824 में पूरा म्यांमार अंग्रेज़ों की गुलामी में चला गया। सौ साल से अधिक समय गुलामी में बिताने के बाद 1938 में म्यांमार को आज़ादी नसीब हुई। आज़ादी के बाद बुद्धिस्टों ने पहली फ़ुर्सत में मुस्लिम मिटाओ पॉलिसी पर सख़्ती से अमल शुरू किया। मुसलमानों को घर छोड़ने पर मजबूर किया गया। लगभग पांच लाख मुसलमानों का विस्थापन हुआ। ज़्यादातर ने बंग्लादेश में पनाह ली और एक बड़ी संख्यां मक्का मुअज़्ज़मा चली गयी। जो लोग विस्थापन न कर सके उनकी नाकाबन्दी शुरू कर दी गयी। इस्लामी कार्यवाहियों पर पाबन्दी लगा दी गयी। वक़्फ़ जायदादों को चारागाहों में बदल दिया, मदरसों व मस्जिदों पर क़दग़न लगा दी गयी। मुस्लिम बच्चों का सरकारी स्कूलों में प्रवेश निषेध कर दिया गया, नौकरियों के दरवाज़े बन्द कर दिये गये। शादी ब्याह में सख़्त क़ानून लगाए गये। लड़को के लिये पच्चीस साल और लड़कियों के लिए तीस साल शर्त लगायी गयी और फिर 1882 में अराकान के मुसलमानों से नागरिकता को भी छीन लिया गया और इस प्रकार वे अपने ही देश में अजनबी हो गये।

पिछले पैंसठ सालों से अराकान के मुसलमान अत्याचार की उस चक्की में पिस रहे हैं। उनके बच्चे नंगे बदन, नंगे पैर, पुराने कपड़े पहने, दयनीय स्थिति में दिखाई देते हैं, औरतें मर्दों के साथ खेतों में काम करती हैं और रहने के घर भी उजाड़ हैं।

ऐसे संगीन हालात में ख़ुशी की बात ये है कि अराकान के मुसलमानों ने अपने दीन व धर्म का कभी सौदा नही किया। एक भी ख़बर ऐसी प्राप्त नहीं हुई कि मुसलमानों ने अपनी जान व माल के डर से इस्लाम को छोड़कर बौद्ध धर्म को अपनाया हो।

जबकि दूसरी ओर ग़ौर करने की बात ये है कि बौद्ध महात्मा गौतम बुद्ध के बारे में मशहूर है कि वे अमन व शांति के दूत थे। कट्टरता से बिल्कुल दूर थे, घर–घर भीख मांगकर नफ़्स को मारने की शिक्षा देते थे और उनके जीवन का उद्देश्य ही भाईचारगी था। लेकिन इस महान व्यक्ति को मानने वाली ये बुद्धिस्ट क़ौम आज इतनी कट्टर एवं अत्याचारी क्यों हो गयी है?किस प्लानिंग के तहत बुद्धिस्टों का दिमाग़ इस ओर मोड़ा गया और किस प्रकार उनके दिमाग़ों में मुस्लिमों से नफ़रत के बीज बोए गये? हक़ीक़त तो यह है कि इसके राजनीतिक व धार्मिक तथ्यों का आज तक निरीक्षण ही न हो सका।

अप्रैल फूल

अबुल अब्बास ख़ाँ

मुस्लिम फ़ौज के क़दम उन्दुलुस (वर्तमान स्पेन) की धरती पर पड़ चुके थे। हर मुजाहिद सर कटाने और जिहाद के जज़्बे से भरा हुआ था। क़ाएद–ए–आज़म तारिक़ बिन ज़ियाद ने आगे बढ़कर सारी कश्तियां जला दीं और सेना को ललकार कर कहा कि पीछे समन्दर है और आगे दुश्मन, समन्दर में कूद कर मरो या दुश्मनों से लड़कर विजय प्राप्त करो। मुजाहिदीन दुश्मनों के लिये मौत के फ़रिश्ते बन कर टूटे और पूरा देश मुसलमानों के अधीन हो गया।

714ई0 से लेकर 1492ई0 तक उन्दुलुस की धरती पर इस्लाम का ध्वज लहराता रहा। 780 बरस तक यह देश इस्लामी शान व शौकत का मालिक था। पूरी मानवता की सबसे बड़ी सभ्यता इसके दामन से जुड़ी हुई थी। कुर्तुबा यूनिवर्सिटी दुनिया का सबसे बड़ा शिक्षण संस्थान था। यहां यूरोप के नवजवान भी आकर विज्ञान, दर्शनशास्त्र और हिकमत का पाठ पढ़ते थे। एक अज़ीमुश्शान मस्जिद "मस्जिद–ए–कुतुर्बा" की स्थापना हुई जो शिल्प का श्रेष्ठ नमूना थी। निर्माणी कला में अलज़हरा और अलहमरा जैसी यादगारें क़ायम हुईं और ये पूरा क्षेत्र गुलज़ार हो गया। आज सदियों बाद भी उसके खन्डहर अपनी महानताा और हुस्न की कहानी सुना रहे हैं।

लेकिन धीरे–धीरे मुसलमान हुकूमत के नशे में चूर, शासक ऐश व अय्याशी में मस्त, जनता अपने आक़ाओं को ख़ुश करने में मगन और उलमा सरकारी तन्ख़्वाहों पर सन्तोष करते हुए, अपने हुजरों और मदरसों में क़ैद। उलमा का शासकों और जनता से बिल्कुल रिश्ता टूट सा गया, सब अपनी मर्ज़ी के मालिक, अपनी हालत पर ख़ुश, न दुनिया की चिन्ता न आख़िरत की!

ईसाइयों को खुली छूट दे दी गयी, उनको बड़े–बड़े पदों पर बिठाया जाने लगा, चापलूसियां बढ़ने लगीं, साजिशी स्कीमें तैयार हुईं, एक अर्से बाद उनका असर ज़ाहिर हुआ, मुसलमान अपनी दुनिया में इस क़दर मस्त कि अपने ख़िलाफ़ होने वाली साज़िशों का उन्हें एहसास तक न हुआ। सैकड़ों बरसों में पतन लाने वाली क्रान्ति की घन्टी हल्की आवाज़ में बजने लगी और फिर ख़तरात की लड़ी टूटी और एक–एक मोती बारी–बारी सरक कर सामने आने लगा। उन ख़तरो ने उन्हें आपस में सलाह मशवरा करने और एक होने का भी मौक़ा न दिया। तेज़ रफ़्तार इन्क़िलाब ने उन्हें कोई पॉलिसी तैयार करने की मोहलत तक न दी और इन्क़िलाबी तूफ़ान उनकी कश्तियां ज़बरदस्ती बहा ले गया और ले जाकर फ़ना के समन्दर मे झोंक दिया और उन्दुलुस "विलुप्त प्रायः प्राणी" हो गया।

उन्दुलुस पर ईसाई क़ब्ज़े के बाद मुसलमान दूसरे दर्जे के नागरिक हो गये। उनके ख़िलाफ़ सख़्त पॉलिसियां बनायी गयीं। नौकरियों से महरूम किया गया। इतिहास से छेड़छाड़ की गयी। उन्हें देश में ज़बरदस्ती घुसने वाला बताया गया। शिक्षण संस्थाओं पर पाबन्दियां लगायीं गयीं। कुरआन व हदीस की तालीम पर रोक लगायी गयी। झूठे इल्ज़ामों का सिलसिला शुरू हो गया। घरों की तलाशिया और गिरफ़्तारियां आम हुईं। दंगों की लहर चल पड़ी और धीरे–धीरे मुसलमानों पर ज़िन्दगी को तंग कर दिया गया।

लेकिन मुसलमान मिट–मिट कर भी क़ायम थे। बस्तियां उजड़ने के बावजूद ज़िन्दगियां बाक़ी थीं, कुछ चेहरों पर दाढ़ियां भी थीं, कुछ उलमा भी दुनिया से छिपे हुए थे। कहीं–कहीं अज़ान भी होती थी। कुछ मस्जिदें भी आबाद थीं। उन्दुलुस की ज़मीन पर बिखरे हुए ये इस्लाम के नाम लेवा ईसाईयों की हलक़ का कांटा थे।

ईसाई शासकों ने एक घिनावनी चाल चली। उन्दुलुस में घोषणा करवा दी गयी कि मुसलमानों की जान व माल की सुरक्षा सरकार की ज़िम्मेदारी हैं। सरकार ने उनके लिये एक अलग मुस्लिम देश बसाने का निर्णय लिया है। जो भी मुसलमान उस मुल्क में बचना चाहते हैं उनके लिये समन्द्री जहाज़ का इन्तिज़ाम किया है। ऐलान सुनते ही सभी मुसलमान जमा होना शुरू हुए और एक अप्रैल को ये समन्द्री जहाज़ "मुस्लिम देश" की ओर रवाना हुआ, जहाज़ कुछ दूर ही पहुंचा था कि ईसाई फ़ौजियों ने बारूद के ज़रिए इसमें सूराख़ कर दिया और दूसरी कश्तियों के सहारे वहां से निकल आए।

जहाज़ हिचकोले खाने लगा, और धीरे–धीरे पानी भरने लगा, और मुसलमानों से भरा हुआ जहाज़ तेज़ी से समन्दर की तह की तरफ़ बढ़ा और कुछ देर बाद वो नज़रों से ओझल होने लगा, साहिल पर खड़े क़हक़हों में मुसलमानों की चीख़ व पुकार हमेशा के लिये ख़ामोश हो गयी और एक अप्रैल का दिन "अप्रैल फूल" के नाम से पश्चिमी सभ्यता का हिस्सा बन गया!! लेकिन आज का मुसलमन इस सभ्यता से क्यों जुड़ा है?

अल्लाह का नाम

ज़बान की ख़ूबियों में एक ख़ूबी ये है कि वो ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह का मुबारक नाम ले। जो लज़्ज़त व मज़ा अल्लाह का नाम लेने में है वो किसी में नहीं। ख़ासकर अल्लाह शब्द ऐसा प्यारा और रूह को छू लेने वाला है, जिसकी लज़्ज़त को वही जानता है, जिसकी ज़बान पर ये मुबारक लफ़्ज़ चढ़ा हुआ होता है। हर ग़म को दूर करने वाला, हर तकलीफ़ की राहत, हर दर्द की दवा अल्लाह शब्द में छिपी हुई है। मुसलमान की ज़िन्दगी के हर उतार–चढ़ाव में ये शब्द समाया हुआ है। इसके बग़ैर किसी मुसलमान की ज़िन्दगी गुज़र ही नहीं सकती है। इस वक़्त से लेकर ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हे तक बल्कि मरने के बाद दफ़नाने तक और दफ़नाने के बाद ईसाले सवाब, उसके मग़फ़िरत के कलिमे अदा करने में उसके बग़ैर चारा नहीं।

जब बच्चा पैदा होता है तो सबसे पहले उसक कानों में अज़ान कही जाती है। उसके कान अल्लाह के लफ़्ज़ से कई बार एक मजलिस में परिचित होते हैं। हर अज़ान में ग्यारह बार अल्लाह का नाम आता है।

इसी तरह इन्तिक़ाल के समय कलिमा तैय्यबा पढ़ने को कहा जाता है। पास बैठने वाला इस कलिमे को पढ़ता है और ख़ुदा मरने वाले को तौफ़ीक़ देता है कि वो दुनिया से जाते जाते इस मुबारक कलिमे को अपनी ज़बान से अदा करे। जिसे अदा करने से शैतान को जो मरने वाले का अच्छा ख़ात्मा देखना नहीं चाहता, नामुरादी मिलती है, और मरने वाला ईमान की हालत में जाता है।

मरने के बाद जनाज़े की नमाज़ में सारे नमाज़ी खड़े होकर जनाज़े की नमाज़ पढ़ते हैं और अल्लाह का नाम बेशुमार बार लिया जाता है। इमाम ज़ोर से अल्लाहुअकबर कहता है। मुर्दा जबकि ज़िन्दगी की सारी चीज़ों से महरूम रहता है, लेकिन इन कलिमों का उस पर जो असर होता है, वो ख़ुदा ही को मालूम है।

क़ब्र में रखते हुए भी लोग अल्लाह का नाम लेते हैं। और उसको ख़ाक के सुपुर्द करते हैं। मिट्टी देने के बाद फ़ातिहा या ईसाले सवाब की शक्ल में बग़ैर अल्लाह के लफ़्ज़ के चारा नहीं, ज़्यादा से ज़्यादा लोग अल्लाह का नाम लेते हैं।

ये तो पैदाइश व मौत के वक़्त का हाल है जो दूसरे लोग अल्लाह का नाम लेकर इस आजिज़ व मजबूर पर अल्लाह के मुबारक नाम के ज़रिये रहमत की बारिश करते हैं। लेकिन ख़ुद उसकी ज़बान को नूर व सरवर बख़्शने का ज़रिया दुआ और कलिमे हैं, जिनकी तलक़ीन आप स०अ० ने फ़रमायी है फिर उससे हर वक़्त एक मुसलमान का वास्ता पड़ता है।

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

ISSUE:04 APRIL 2015 VOLUME: 07

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
AT A GLANCE

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.